नवनाथ

(चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि)

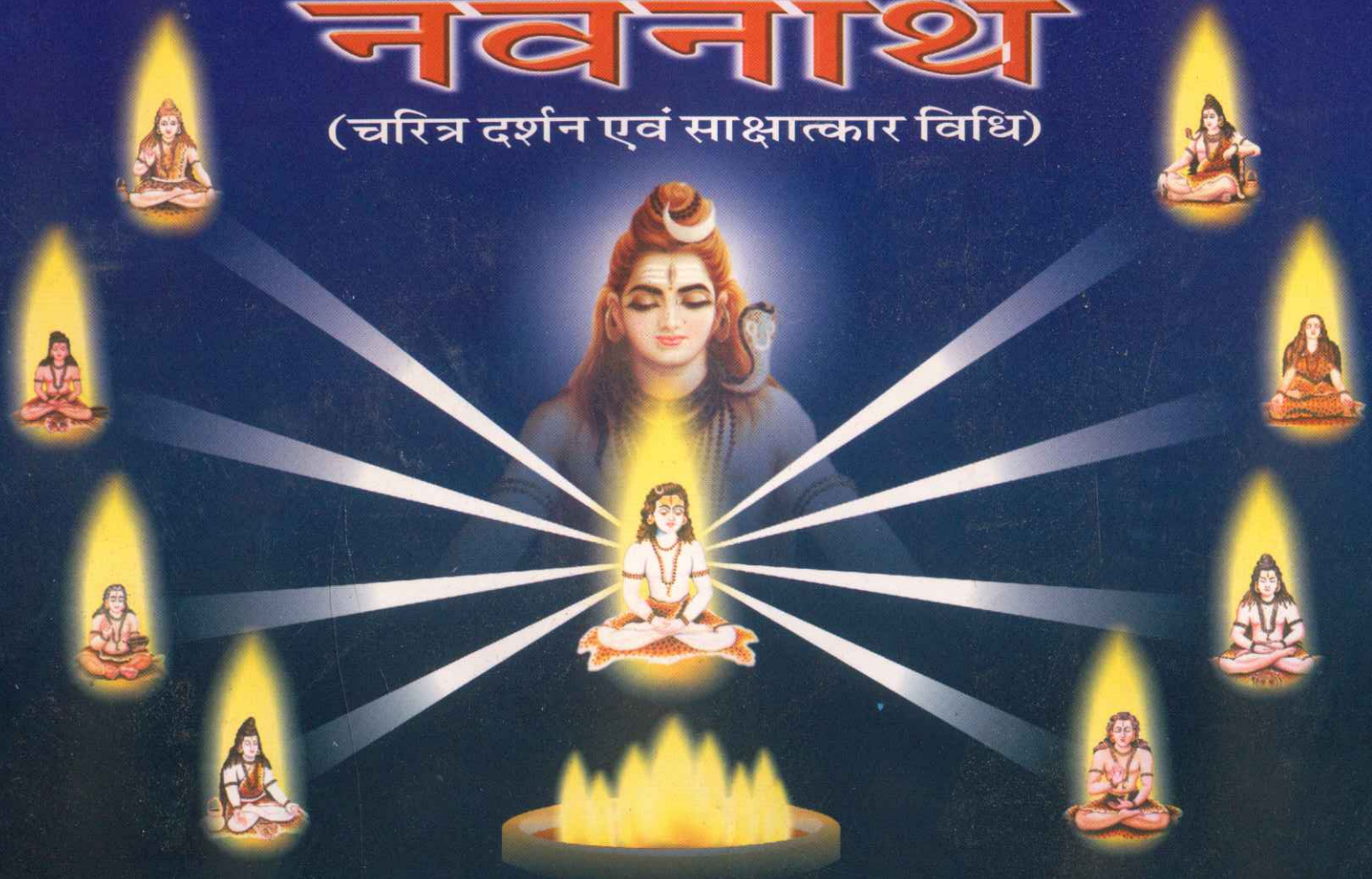

लेखक एवं चित्रकार – योगी विलासनाथ

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा, गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर, हरिद्वार

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः।
निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।

गोरक्षनाथाय भद्राय शिव स्वरूपाय वेधसे।
शिव गोरक्षनाथाय शिष्य मत्स्येन्द्र च् नमः।।

महन्त श्री अवैद्यनाथ जी
सभापति (योगी महासभा)
श्री गोरक्ष पीठाधीश्वर (गोरखपुर)
पूर्व सांसद (लोकसभा)

महन्त श्री चान्दनाथ जी
उपसभापति (योगी महासभा)
श्री मठ अस्थल बोहर मठाधीश्वर
रोहतक (हरियाणा)
पूर्व विधायक (विधान सभा) राजस्थान

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु, गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरू साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

आशीर्वचन

प्रिय योगी विलासनाथ
शुभ आशीर्वाद

यह नवनाथ दर्शन ग्रंथ जिसका संशोधन करके सजिन्दा ढंग से रचना की गयी है। यह नाथ सम्प्रदाय के लिये एवं नवनाथ उपासक भक्तजनों के लिये एक अमृतमय वरदान सिद्ध होगा, जोकि अत्यन्त सरल एवं सगुण, निर्गुण से भी परे, जिसकी जैसी इच्छा हो वैसे ही वरदान प्राप्त होगा।

सगुण स्वरूप की उपासना करते हुए, जीव ब्रह्म एक्य भाव में पहुंचकर "अहम् ब्रह्मास्मि" पद की प्राप्ति होने तक उपासना में कोई सन्देह नहीं है। इसलिए पाठक गण इस विषय में अधिक से अधिक जानकारी लें, जिसमें जीव भाव समाप्त होकर ब्रह्म भाव की प्राप्ति हो। कारण कि ॐकार आदिनाथ जी से लेकर गोरक्षनाथ जी तक नवनाथ जी स्वयं गुरू–शिष्य के स्वरूप में गुरू–शिष्य उपदेशामृत निश्चित करते हुए केवल एकमात्र मन्त्र ही, तारक मन्त्र देकर जीव भाव से ब्रह्म भाव की प्राप्ति कर दी गयी है।

इसलिए यह भक्ति ज्ञान उपासना एवं मुक्ति मोक्ष तक सभी प्रकार की प्राप्ति इस ग्रंथ की उपासना में है। जोकि चित्रांकन करते हुए उनके चरित्रों का संक्षिप्त में वर्णन किया गया है। अतः आप सभी सज्जनों से अनुरोध है कि इसके द्वारा दूर दृष्टि प्राप्त करें।

इति शुभम्

योगी आनन्दनाथ जी

(महामंत्री योगी महासभा)
गोरक्षनाथ मन्दिर, अपर रोड
हरिद्वार, उत्तराखण्ड।

नवनाथ

(सचित्र चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि)

—: अनुक्रमणिका :—

- ★ आदिनाथ जी 2
- ★ उदयनाथ जी 6
- ★ सत्यनाथ जी 10
- ★ सन्तोषनाथ जी 14
- ★ अचल अचम्भेनाथ जी 18
- ★ गजबेली गजकन्थड़नाथ जी 22
- ★ सिद्ध चौरंगीनाथ जी 26
- ★ मत्स्येन्द्रनाथ जी 30
- ★ गुरू गोरक्षनाथ जी 34
- ★ नवनाथ साक्षात्कार (साधना विधि) 41
- ★ नवनाथ दर्शन—साक्षात्कार—अनुभूति 45
- ★ मन को एकाग्र कैसे करें 49
- ★ तंत्र द्वारा अन्य विधि 53
- ★ विशेष विधि 56
- ★ भजन "श्री नाथ दरबार" 59
- ★ भजन "जय श्री योगी गोरक्षनाथ" 61
- ★ आरती "श्री नवनाथ दर्शन" 62
- ★ ग्रंथ महात्मय 64

C

सर्वाधिकार सुरक्षित

L-26634/2006

इस पुस्तक के किसी भी भाग एवं अंश की नकल करना गैर कानूनी होगा।

—: लेखक एवं चित्रकार :—

योगी विलासनाथ

21 सितम्बर 2009, विजया दशमी

शक सम्वत् १६३१ विक्रम सम्वत् २०६६

प्राप्ति स्थान : **अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा**

गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा), अपर रोड, हरिद्वार, फोन : (01334) 226583

प्रकाशक : **श्री बाबा मस्तनाथ मठ, मठ अस्थल बोहर, जिला रोहतक, हरियाणा**

द्वितीय संस्करण : 2000 प्रतियाँ

मूल्य : 65 /-

इनको ज्योति स्वरूप भी कहते हैं। ऐसे ज्योति के रूप में वह प्रत्येक प्राणी में निवास करते हैं। विशेषतः योग साधक के अनहद चक्र (हृदय स्थान) तथा रूद्र ग्रन्थि में, रूद्रनाथ रूप में विराजते हैं, योगियों के भ्रू मध्य (त्रिपुटी में) ज्योति स्वरूपी हंस रूप में विद्यमान हैं तथा सहस्त्रागार में तालु स्थान में गुरू गोरक्षनाथ जी के स्वरूप में दर्शन होते हैं।

भगवान शिव, शक्ति अर्थात् पराशक्ति बिना दर्शन नहीं देते यह पराशक्ति योगियों की कुण्डलिनी शक्ति रूप में मूलाधार चक्र से उत्थान करते हुए हृदय स्थान में आती है और रूद्रग्रन्थि को जागृत करती है, तब आदिनाथ जी रूद्ररूप में दर्शन देते हैं। यही कुण्डलिनी शक्ति जब भ्रू मध्य में आती है तो ज्योति का दर्शन होता है और जब तालु प्रदेश में सहस्त्रागार में आती है तो शिवरूपी गुरू गोरक्षनाथ जी के दर्शन होते हैं। ऐसे नाथ दर्शन पाकर योगी परम तृप्त, कृतार्थ, आनन्दित हो जाता है। उनके मुखमण्डल का दैदिप्यमान तेज करोड़ों सूर्य के समान होता है। नीली-पीली सुनहरी जटाओं में अमृत बरसाता चन्द्र, अति शोभायमान है। नेत्र कमल सदृश्य सुन्दर लग रहे हैं। त्रिपुण्ड भस्म, तीसरा नेत्र, तीनों लोक तथा तीनों काल का ज्ञाता दिख रहा है। कर्पूर कान्ति तेज से सम्पूर्ण सृष्टि प्रकाशित हो रही है। नीलकण्ठ में शेषनाग, माला समान विहार कर रहे हैं। नाथ सिद्धों के नाद जनेऊ, रूद्राक्ष मालाओं से वक्ष स्थल अत्यन्त सुन्दर दिख रहा है, भस्मी रमी काया, कटी वस्त्र मृगछाला, बाघांबर का आसन, त्रिशूल, डमरू, शंख, कमण्डल आदि से युक्त दिव्य दर्शनों को पाकर योगी को परम कैवल्य आनन्द की अनुभूति होती है और यही परम शिव लोक कैलाश, परम मोक्ष मुक्ति को प्राप्त करवाता है।

ऐसे निर्गुण निराकार आदिनाथ जी की सगुण रूप शिव रूप में अनन्त लीलाएं की हैं, जिनको शिव की योगमाया लीला कहते हैं। ध्यान, तपस्या, सृष्टि उत्पत्ति, शक्ति उत्पत्ति, नाथ सिद्धों के अवतार, सती संग विवाह, राक्षस संहार, पार्वती विवाह, गणेश उत्पत्ति, गणेश विवाह, कार्तिक विरह, असुरों को वरदान देना तथा उनका संहार करना, बारह ज्योतिर्लिंग

रूप में स्थानों में विराजना आदि न जाने कितनी लीलाएं उन्होंने रची। उनकी विशेष लीला तो नवनाथों की अर्थात नाथ सम्प्रदाय की उत्पत्ति कर, योग द्वारा माया रहित मोक्ष को जाना अनंत योग अनंत ज्ञान का उन्होंने निर्माण किया। एक बार कैलाश में नारदजी ने शिव जी के गले में मुण्डमाला देखकर उसका गुणगान किया। इसका रहस्य पार्वती ने शिव आदिनाथ जी को एकान्त में पूछा, अतः आदिनाथ जी-पराशक्ति पार्वती को क्षीर समुद्र के किनारे एक डोंगी पर एकान्त में ले गये। वहां उन्होंने नाथ सिद्धों का महायोग ज्ञान जो प्राणि को भव पार कर अमरत्व प्रदान करता है, यह उपदेश देकर पार्वती को प्रथमतः शिष्य रूप में नाथ बनाया, अर्थात वहां नाथ सिद्धों की गुरू शिष्य परम्परा प्रारम्भ हुई और उदयनाथ पार्वती नाथ दीक्षित हुई उसी समय क्षीर समुद्र में स्थित मत्स्य गर्भ में यही ज्ञान माया स्वरूपी मत्स्येन्द्रनाथ जी ने सुना और ॐकार आदिनाथ के शिष्य बनकर मत्स्येन्द्रनाथ नाम से प्रख्यात हुए। इस प्रकार आदिनाथ जी ने नाथ सम्प्रदाय का श्री गणेश किया। ऐसे सर्व व्यापक श्री ॐकार आदिनाथ जी के भक्त, सेवक, शिष्यगण, देवी-देवता, असुर प्रत्येक प्राणी उनकी भक्ति करते हैं। वह सभी के इष्टदेव एवं परम ईश्वर हैं। इनकी प्राप्ति ही मोक्ष-मुक्ति है।

-: गायत्री मन्त्र :-

"ॐ ह्रीं श्रीं आं आदिनाथाय विद्महे, ॐकार स्वरूपाय धीमहि तन्नो निरन्जन प्रचोदयात्"

या

"ॐकार आदिनाथाय नमः"

उपरोक्त में से किसी एक मन्त्र का १०८ संख्या में नित्य जप करना चाहिये। □

श्री सिद्ध योगी उदयनाथ जी (पार्वती)

उदयनाथ जी (पार्वती)

मूल स्वरूप माँ पार्वती जी

सृष्टि उत्पत्ति के लिये, शक्ति उत्पन्न करना आवश्यक था, इसलिये ॐकार आदिनाथ जी ने अपने ही काया के अन्दर की सूक्ष्मरूपी पराशक्ति को अपने ही अंग से बाहर स्थूल रूप में प्रकट किया, जो अष्टभुजा शक्ति के रूप में प्रकट हुई। दक्ष की तपस्या से अतिप्रसन्न होकर इस शक्ति ने सती नाम से सगुण, सुन्दर रूप में दक्ष के यहां जन्म लिया। सती ने तपस्या कर शिव को प्रसन्न करके उनसे विवाह किया। दक्षयज्ञ में पति की निन्दा सुनकर सती ने योगाग्नि में आत्मदाह किया और योगमाया नाम से प्रचलित हुई। हिमालय वंश में पार्वती रूप में जन्म लेने पर उन्हें धरत्री रूप कहा जाने लगा। शिव प्राप्ति के लिये ॐ नमः शिवाय मंत्र तप से शिव को प्रसन्न कर विवाहोपरांत कैलाश लोक शिव धाम में निवास किया।

एक समय नारद मुनि ने कैलाश लोक में शिवजी के गले में मुण्डमाल को देख भाव विभोर होकर स्तुति गान किया, उनके जाने के पश्चात इस स्तुति का रहस्य पार्वती ने शिवजी से एकान्त स्थान में पूछा। इस अमरत्व के गुप्त ज्ञान के सोपान हेतु शिव-पार्वती के संग एकान्त क्षीर सागर किनारे श्रृंगपर्वत (डोंगी) पर पहुंचे। जहां उन्होंने योगज्ञान अर्थात् अमर ज्ञान, मृत्युंजय रूप में पार्वती को दिया। परिणाम स्वरूप पार्वती जी को वैराग्य उत्पन्न हुआ। शिवजी ने उन्हें दीक्षित किया, यह महायोग ज्ञान पार्वती ने प्रथमतः शिष्य रूप में लिया अतः ज्ञानोदय होने के कारण शिव ने कहा हे पार्वती ! नाद, जनेऊ, झोली, खप्पर, मुद्रा धारण कर मुत्युलोक में नाथ सम्प्रदाय में तुम्हारा अवतार उदयनाथ नाम रूप में पूज्यनीय होगा। एक बार गुरू गोरक्षनाथ जी घनाघोर जंगल में एक बिल्व पत्र वृक्ष के नीचे बैठकर गगन विहार सिद्धि प्राप्ति हेतु तपस्या कर रहे

थे, उसी क्षेत्र में उदयनाथ जी भी तपस्या कर रही थीं। गुरू गोरक्षनाथ जी की तपस्या देखकर उनकी परीक्षा लेने हेतु सुन्दर मोहिनी रूप धारण कर निर्वस्त्र अवस्था में लेट गयी, समाधि जागृत होने के पश्चात गोरक्षनाथ जी ने दृष्टिपात होने पर उनका शरीर बिल्व पत्तों से ढक दिया। उदयनाथ जी ने प्रसन्न होकर गोरक्षनाथ जी को अपने मूल स्वरूप (पार्वती जी का) में दर्शन दिये और अपने रक्त रूप में भगवा वस्त्र प्रदान किये तथा अपने गुरू आदिनाथ जी का परिचय दिया। उदयनाथ जी सूक्ष्मरूपी पराशक्ति, इस चराचर सृष्टि में विद्यमान हैं। स्थूल रूप में कैलाश मानसरोवर पर निवास करती हैं। त्र्यम्बक महाकुम्भ पर्व पर नवनाथ चौरासी सिद्ध अनन्त कोट नाथ सिद्ध एकत्रित हुए थे तब उदयनाथ पार्वती जी ने नाथसिद्धों को दया, क्षमा, शान्ति, कृपा, आशीर्वाद आदि पर उपदेश देकर अपने योगशक्ति से चरणों में पाताल, पेट (गर्भ) में मृत्युलोक, वक्षस्थल में स्वर्ग का तथा शीश में अखण्ड ब्रह्माण्ड का दर्शन करवाया था। सृष्टि उत्पत्ति, शक्ति पराशक्ति रूप से कैसे हुई? एवं योग में शक्ति का महत्व आदि पर उन्होंने उपदेश दिया। आदिनाथ जी ने उदयनाथ जी को जगतजननी, गोरक्षनाथ जी ने ज्योति स्वरूपी एवं मत्स्येन्द्रनाथ जी ने योगमाया नाम प्रदान करके इन्हें गौरान्वित किया। उदयनाथ जी (पार्वती) ने अलवर जोधावास क्षेत्र के घनाघोर जंगल में स्थित गुफा में साठ हजार वर्ष घोर तपस्या की। सम्पूर्ण चौदह भुवन भ्रमण किया। स्वयं पराशक्ति होने के कारण सभी सिद्धियाँ उनकी दासी थी। एक बार घाटी में भर्तृहरिनाथ जी तपस्या में लीन थे। उस समय उदयनाथ जी भी उनको भेंट देने के लिये वहां आई थी। गंगा माता ने भी उनके दर्शन किये थे। भर्तृहरिनाथ जी को दर्शन देकर हरिद्वार जाने का आदेश दिया जहां उत्तरार्ध काल में हरिद्वार स्थित गुफा में वे तपस्यारत रहे। उदयनाथ जी ने समय-समय पर नाथ सिद्धों को उपदेश एवं मार्गदर्शन किया। दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी के सप्तश्रृंग पर्वत पर शक्ति साधना तपस्या करने के समय वहां उदयनाथ जी ने दर्शन देकर उन्हें वज्रेश्वरी सप्तकुण्ड (मुंबई के पास) जाने को कहा और एक वनस्पति देकर कहा जिस कुण्ड में यह वनस्पति मुरझा जायेगी उसी कुण्ड में तुम्हें मृत संजीवनी का लाभ होगा।

नाथ सिद्ध योग में जब कुण्डलिनी शक्ति जागृत होती है, उदयनाथ जी के दिव्य दर्शन प्राप्त होते हैं। स्वाधिष्ठान चक्र में सावित्री रूप में, सुषुम्ना में गंगा रूप में, अनहद चक्र में उमा रूप में, मणिपुर चक्र में लक्ष्मी रूप में, विशुद्धि चक्र में अविद्या शक्ति रूप में, प्राण चक्र में पराशक्ति रूप में, चिबुक चक्र में सरस्वती रूप में, कर्णमूल में श्रुति शक्ति रूप में तथा भ्रूमध्य में ज्ञान शक्ति रूप में, ब्रह्मरन्ध्र में अनुपम शक्ति रूप में, अकण्ठ पीठ में अकलेश्वरी रूप में अन्त में असंख्य चक्र में असंख्या शक्ति रूप में दर्शन देकर सम्पूर्ण ऋद्धि-सिद्धियाँ, वज्र काया, ब्रह्माण्ड भ्रमण, महाज्ञान योगी को प्रदान करती है, योग साधना में कार्य शक्ति से पराशक्ति का अनुभव होता है। नाथ सिद्धों के सभी शक्ति साधना की यह ईष्ट शक्ति आदिशक्ति पराशक्ति रूप में कार्य करती है। मन्त्र तन्त्र साधना, कुल अकुल या कौल साधना, कापालिक साधना वज्रायीनी साधना, घोर अघोर साधना, अत् एव योग, कुण्डलिनी साधना में उदयनाथ जी की कृपा प्रसन्नता के बिना साधना सिद्ध नहीं होती। विशेषतः मन-इन्द्रियों पर विजय पाने पर उदयनाथ पार्वती जी दर्शन देते हैं। ऐसे पूर्णत्व प्राप्त उदयनाथ जी की नवनाथों व नाथ सिद्धों में उच्च स्थान में मान्यता है। श्रद्धालुजन, अलवर जोधावास (गाँव-मई जोड़) क्षेत्र में उनकी समाधि पर पूजा अर्चना कर श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

गायत्री मन्त्र :- ॐ ह्रीं श्रीं उं उदयनाथाय विद्महे, धर्तीरूपाय धीमही तन्नो पराशक्ति प्रचोदयात्।

अथवा

ॐ श्री उदयनाथाय नमः

उपरोक्त में से किसी एक मन्त्र का १०८ बार नित्य जप करना चाहिये।

उन सिद्ध योगी उदयनाथ जी (पार्वती) को हम बारंबार नमस्कार करते हैं। पुनः पुनः आदेश करते हैं। □

श्री सिद्ध योगी सत्यनाथ जी

सत्यनाथ जी

मूल स्वरूप ब्रह्मा जी

नवनाथ सिद्धों में सिद्धयोगी सत्यनाथ जी ब्रह्मा जी के स्वरूप अवतार माने जाते हैं। सृष्टि उत्पत्ति काल में जब भगवान विष्णु जी जल में शयन कर रहे थे तब उनकी नाभि कमल से एक महाविशाल कमल पुष्प का निर्माण हुआ जिसका तना अनेक योजन लंबा था आदिनाथ जी की कृपा से उस कमल पुष्प पर ब्रह्मा जी का प्रादुर्भाव हुआ। कौतुहलवश ब्रह्मा जी तने मार्ग से उतरते हुए भगवान विष्णु जी के पास आये और उनमें कौन बड़ा-कौन छोटा अर्थात् कौन गुरू-कौन शिष्य इस पर वाद हुआ, दोनों में युद्ध हुआ अन्त में ॐकार आदिनाथ जी ने दोनों के मध्य एक आदि-अन्तहीन अग्नि स्तम्भ प्रकट किया। दोनों चकित व जिज्ञासु हो सोचने लगे, तब विष्णु जी ने स्तम्भ के एक छोर का पता लगाने पाताल लोक के लिये, और ब्रह्मा जी ने उसके दूसरे छोर का पता लगाने के लिये स्वर्ग की ओर प्रस्थान किया। काफी समय पश्चात दोनों अशान्त, शंकित, क्रोधादि भाव से युक्त हो वापस लौटे, तब ॐकार आदिनाथ जी अपने नाथ स्वरूप अर्थात् बाल गोरक्ष रूप में प्रकट हुए उनका तेजस्वी तपस्वी एवं दिव्य रूप देखकर तथा प्रचण्ड धूना देखकर वह शान्ति को प्राप्त हुए अतः उन्होंने जती गोरक्ष स्वरूपी आदिनाथ जी को हमें यह नाथ स्वरूप वरण करके अनुग्रह करने की विनती की और उन्होंने अपने-अपने आसन ग्रहण किये, अर्थात विष्णु जी शेषासन तथा ब्रह्माजी अपने विशाल कमलासन पर विराजमान हुए व उनकी जिज्ञासा को महायोग ज्ञान देकर शान्त कर दोनों के विशेषाग्रह पर शिष्य स्वीकार कर उन्हें दीक्षित किया और कहा - हे ब्रह्मा, तुम्हें हमारा यह नाथ स्वरूप अवश्य प्राप्त होगा और तुम जल तत्व द्वारा अवतार लोगे तथा तुम चार वेद, अठारह पुराण, चौदह शास्त्र, सात वार, सत्ताईस नक्षत्र, नवग्रह, नव व्याकरण,

बारह मास, सोलह कला, संध्या तर्पण, मंत्र-तंत्र, चौबीस गायत्री, सूतक-पातक, षडकर्म आदि के ज्ञाता होंगे। मृत्युलोक में तुम सत्यनाथ जी नाम से हमारा नाथ योगेश्वर रूप धारण करोगे और लोग तुम्हारी पूजा करेंगे, यह वरदान देकर आदिनाथ जी अंतर्ध्यान हुए। तत्पश्चात सत्यनाथ जी हिमालय क्षेत्र गढ़वाल में प्रकट हुए वहां उन्होंने अनेक वर्ष तपस्या की उस समय भुवनपाल नामक एक क्षत्रीय धारानगरी से आकर गढ़वाल क्षेत्र में रहने लगा। एक दिन जंगल में वह शिकार करने गया तो उसे सिद्ध सत्यनाथ जी के प्रत्यक्ष दर्शन हुए। सत्यनाथ जी ने उससे भोजन की अपेक्षा की, भुवनपाल उन्हें लेकर अपने घर आया और बड़े आदर और श्रद्धा से उसने तथा उसकी माता ने सत्यनाथ जी को भोजन कराया। सत्यनाथ जी द्वारा ५२ रोटियाँ खा लेने पर भुवनपाल की माता ने उनसे कहा कि हे योगेश्वर अब और रोटियाँ नहीं हैं तब सत्यनाथ जी की कृपा से भुवनपाल के यहां अनाज धान्य के भण्डार भर गये और प्रसन्न होकर उसे वरदान दिया कि तुम यहां के राजा बनोगे एवं तुम्हारी ५२ पीढ़ी यहां राजपाठ का सुख भोगेगी और वैसा ही घटित हुआ। सिद्ध योगी सत्यनाथ जी सर्वज्ञानी, महायोगी, महासिद्ध थे उन्हें रसायन सिद्धि, तंत्र-मंत्र सिद्धि प्राप्त थी। उन्होंने अनेकों शिष्य बनाये तथा जन-जन का कल्याण किया। उन्होंने गढ़वाल क्षेत्र में सतनाथ (ब्रह्मा जी) नाम का पंथ स्थापित किया। आज भी वहां सतनाथी पंथ के महात्मा विचरण करते हैं। यह पंथ, नाथ सम्प्रदाय के १२ पंथों में से एक है।

एक समय हिमालय क्षेत्र में अपने भक्त अजयपाल नाथ पर उन्होंने कृपा की उसे कन्धों पर बिठाया और अपनी काया को बहुत विशाल, ऊँची बनाया और कहा कि भक्त तेरी नजर से (दृष्टि में) जितना प्रदेश दिखेगा वहां तक तेरा राज्य होगा। उनकी नजर हिमालय शिवालिक पर्वत श्रेणी तक पहुंची अतः वह डर के कहने लगे महाराज आप अपना शरीर सौम्य करें और उतना ही राज्य फैल गया। इस प्रकार उनका अनेक गढ़वाली राज परिवार वंशों में कृपातित सम्बन्ध रहा। उन्होंने भारत

भ्रमण कर योग ज्ञान का प्रचार किया वह भगवी अलफी पीर की टोपी तथा चादर धारण करते थे। वह श्री शैल या श्री पर्वत पर गये वहां घोर तपस्या की बाद में शैल पर्वत नागार्जुन कोडा गुण्टुर आकर योग साधना की फिर महाराष्ट्र स्थित शैल पर्वत पर साधना की। पाताल भुवनेश्वर स्थित गुफा में उन्होंने बहुत समय तक मंत्र तंत्र साधना की। तमिलनाडु में उन्होंने रसायन सिद्धि प्राप्त की व विज्ञान योगी हो जगन्नाथ पुरी में मठ स्थापना करके साधना करते रहे। महाराष्ट्र धारवाड क्षेत्र में गड़ग में भी मठ स्थापन किया। सत्यनाथ जी अजर अमर काया सिद्ध योगीराज हैं।

नाथ सिद्ध योगी एवं साधक के लिंगस्थान स्वाधिष्ठान चक्र के इष्टदेव हैं। परब्रह्मा सावित्री शक्ति के साथ विराजमान योगी को तेजस्वी काया अंतर्मुखता त्याग वैराग्य प्रदान करते हैं तो ब्रह्मग्रंथी द्वारा ब्रह्मानन्द का साक्षात्कार करवाते हैं। शास्त्र पुराण काव्य, रसायन आयुर्वेद कला ज्ञान विज्ञान आदि का उन्हें ज्ञान प्रदान करते हैं, आज भी वह समाधिस्त योगियों को दर्शन लाभ देते हैं।

-: गायत्री मन्त्र :-

ॐ ह्रीं श्रीं सं सत्यनाथाय विद्महे, ब्रह्मास्वरूपाय धीमही तन्नो निरन्जनः प्रचोदयात्।

अथवा

ॐ श्री सत्यनाथाय नमः

उपरोक्त में से किसी एक मन्त्र का १०८ बार नित्य जप करना चाहिये।

उन ब्रह्मा स्वरूपी सिद्ध सत्यनाथ जी को हम बारंबार नमस्कार करते हैं। पुनः पुनः आदेश करते हैं। □

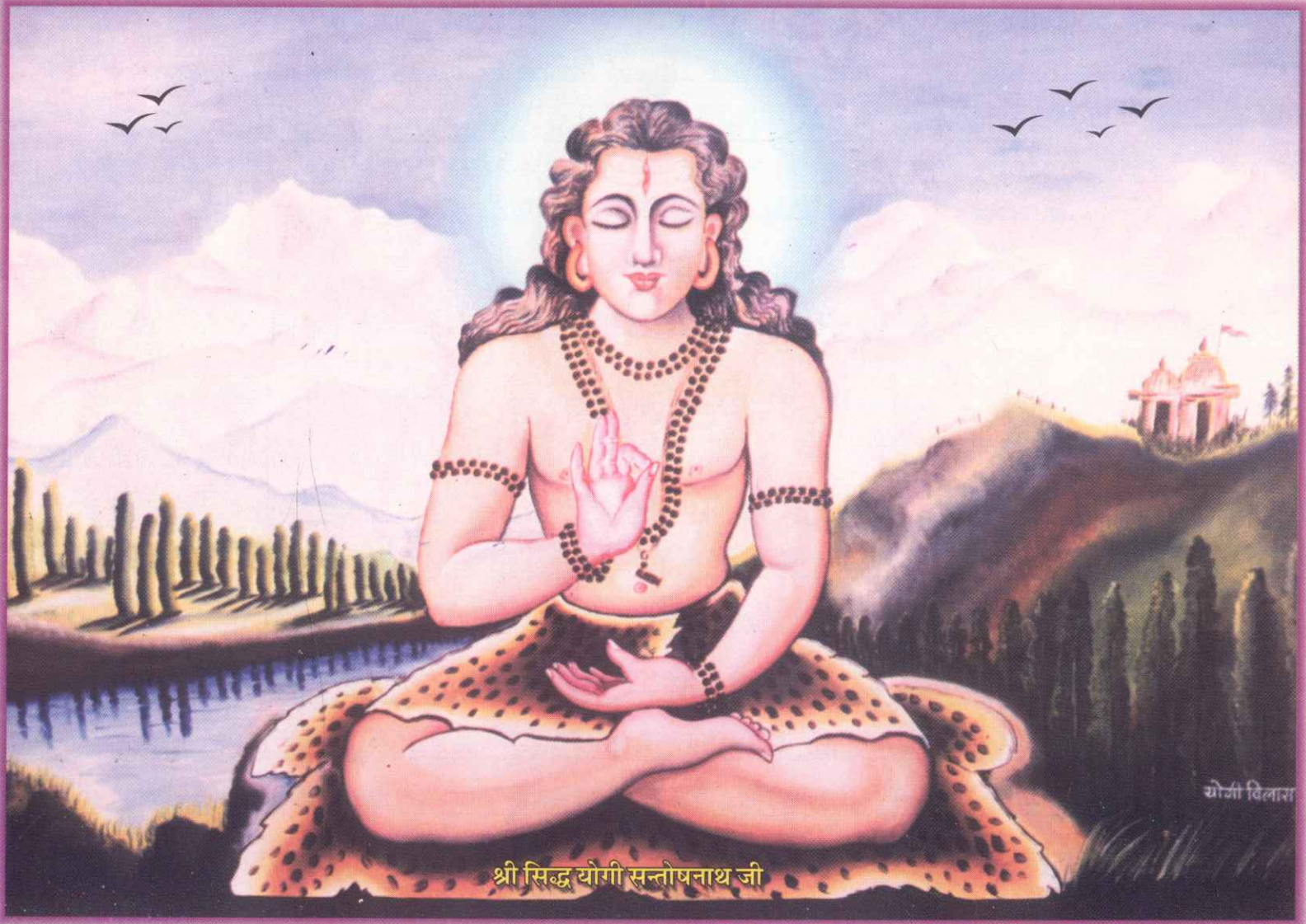

श्री सिद्ध योगी सन्तोषनाथ जी

सन्तोषनाथ जी

मूल स्वरूप श्री विष्णु जी

श्री सिद्ध योगी सन्तोषनाथ जी नवनाथों में एक महासिद्ध योगेश्वर माने जाते हैं, वह प्रत्यक्ष भगवान विष्णुजी के स्वरूप अंश थे। सृष्टि कर्ता ब्रह्माजी एवं विष्णुजी के वाद युद्ध में जब अग्निस्तंभ निर्माण कराके ॐकार आदिनाथ जी ने नाथ स्वरूप गोरक्षनाथ रूप में दर्शन दिया तब प्रभावित विष्णुजी ने नाथ स्वरूप में दीक्षा देने की विनती की, अतः आदिनाथ जी ने उपदेश-दीक्षा देते हुए कहा कि हे विष्णु जी तुम मेरे नाथ स्वरूप को अवश्य प्राप्त करोगे, तुम मृत्युलोक में तेज स्वरूप अवतार लोगे, तुम्हें राजपाट छत्र सिंहासन, हीरा, माणिक, मोती अस्त्र-शस्त्र प्राप्त होंगे। १६ सहस्त्र गोपीओं के भरतार होंगे, इत्यादि वरदान दिया। जब ब्रह्माजी विष्णुजी ने सृष्टि का निर्माण किया किन्तु उनमें चेतना नहीं थी। अतः विष्णु जी ने आदिनाथ जी को सृष्टि में चेतना निर्माण करने को कहा तब गोरक्ष स्वरूप आदिनाथ जी ने अग्नि स्तंभ अर्थात धूने में से बभूति देकर कहा इस बभूति से सृष्टि चेतन होगी, तुम इसे धारण करोगे। हाथ खप्पर, चिमटा, झोली, नाद, मुद्रा धारण करोगे। तपस्या कर चमत्कार करोगे तुम सृष्टि के पालनहार होगे अतः लोग तुम्हें सन्तोषनाथ नाम से पूजेंगे ऐसा वरदान देकर वह अंतर्ध्यान हो गये।

सन्तोषनाथ जी काश्मीर खण्ड में प्रगट हुए उन्होंने ७२ हजार वर्ष घोर तपस्या की जम्मू क्षेत्र में सुमेरपुर क्षेत्र में अखण्ड धूना चेतन कर योग साधना करते रहे। उस समय एक भक्त श्री नारायण शर्मा ब्राह्मण उन्हें रोज प्रातः गौ का दूध सन्तोषनाथ जी की कुटिया में लाकर देता था। नाथ जी ने कहा दरवाजा खोलकर अन्दर कभी नहीं आना दूध बाहर दरवाजे में ही रखा करो। एक दिन मन में संदेह होकर ब्राह्मण ने अन्दर झांककर देखा तो वह अत्यंत भयभीत हुआ उसने देखा की अन्दर

बब्बर शेर बैठा है तब उस ब्राह्मण को ३ दिन तक बुखार चढ़ा फिर भी दूध पहुंचाता ही रहा एक दिन वह कमजोरी के कारण दूध देने नहीं जा सका बड़ा दुःखी हुआ इतने में गौ ने हुंकार दिया खिड़की में से ब्राह्मण ने देखा की वही शेर गौ के आचल (थन) में दूध पी रहा है और गौ प्रेम से उसे चाट रही है। विस्मित होकर गांव वालों को बुला के दिखाया हिम्मत जुटा कर शेर के सन्मुख जाकर क्षमा मांगी तब स्व स्वरूप में सन्तोषनाथ जी ने उन्हें दर्शन दिया। गांव-गांव चर्चा हुई लोग दर्शन लेने आने लगे अनेक शिष्य भक्त बने। एक बांझ कुम्भारीन थी उसने पुत्र की इच्छा की नाथ जी ने उन्हें प्रसाद स्वरूप एक फल खाने को दिया उसने तुरन्त फल खाना था किन्तु कुम्भारीन ने वह प्रसाद फल प्रातः स्नान करके प्रसाद फल खाऊंगी, यह सोचकर एक बड़े कुम्भ में फल को रख दिया। प्रातः आंख खुलने पर कुम्भारिन ने मटके में से बच्चे के रोने की आवाज सुनी। कुम्भारीन ने मटका फोड़कर सुन्दर बालक को बाहर निकाला। दुग्धपान की समस्या उत्पन्न होने पर वह दुःखी होकर प्रार्थना करने लगी सन्तोषनाथ जी की असीम कृपा से उसके स्तनों में दूध उतर आया। आगे वही दिव्य बालक सन्तोषनाथ जी का चेला कुम्भनाथ नाम से प्रसिद्ध हुआ। सन्तोषनाथ जी को जब त्र्यम्बक कुम्भ में आमंत्रित किया गया वहां सिद्धों को उन्होंने अस्त्र मंत्र, मोहिनी अस्त्र, नागास्त्र आदि का ज्ञान दिया। इस प्रकार अनेक चमत्कार किये वह सर्व सिद्ध ज्ञानी योगीराज हैं। जम्मु और कश्मीर खण्ड में राजगुरू बनकर मार्गदर्शन किया, अनेकों राजा उनके शिष्य बने। राजा विक्रमादित्य के राजपाट के समय गुरू गोरक्षनाथ जी ने विक्रमादित्य को साम-दाम-दण्डादि विद्या संगीत शास्त्र, विशेषतः खगोलिक तंत्र विद्या में सन्तोषनाथ जी की जल में तेज तत्व की विधि अर्थात चारों तरफ जल और बीच में अग्नि में चतुर्मास की विधि करने को बताई थी। अतः सन्तोषनाथ जी प्रसन्न होकर उन्हें मुख्य सूत्र प्रदान किये थे। उन्होंने बद्रीनाथ कैलाश द्वारिका पशुपतीनाथ रामेश्वरम में तपस्या कर चमत्कार किये। जम्मु में उन्होंने ब्राह्मण वर्ग को वरदान दिया कि तुम ज्ञान, शास्त्र, कर्मकांडादि गुणों से विख्यात होंगे उन्होंने शिव योग मंत्र ज्ञान देकर वहां प्रचार किया था। वहां के पंडित विख्यात हैं। वहां आज भी शैव

पंथी नाथ हैं।

सन्तोषनाथ जी प्रत्यक्ष विष्णुअंश थे योगिओं के लिये कुण्डलिनी योग में मणीपुर चक्र नाभी स्थान में शक्ति महालक्ष्मी सह इष्ट रूप में विराजमान हैं। इस जागृत से योगी को वैकुण्ठ भ्रमण ब्रह्माण्ड भ्रमण तथा आत्मानन्द महाआनन्द की प्राप्ति होती है। विष्णु ग्रंथी जागृत से सन्तोष शाश्वत समाधान एवं महाआनन्द की प्राप्ति होती है। नाद योग में बासुरी शंख का नाद सुनाई देता है। योगी राजयोग का भागी होता है। भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, साम दाम दण्ड आदि सौख्य प्राप्त होता है। अपने भक्त का वह पालन एवं संरक्षण करते हैं। योगी ने उड्डीयन बन्ध सिद्ध कर, शाम्भवी मुद्रा में स्थिर होकर सन्तोषनाथ जी का मंत्र जाप करने पर दर्शन अवश्य होगा।

-: गायत्री मन्त्र :-

ॐ ह्रीं श्रीं सं सन्तोषनाथाय विद्महे, विष्णुरूपाय धीमही तन्नो निरन्जनः प्रचोदयात्।

अथवा

ॐ श्री सन्तोषनाथाय नमः

उपरोक्त में से किसी एक मन्त्र का १०८ बार नित्य जप करना चाहिये।

उन सिद्ध योगी सन्तोषनाथ जी को हम बारंबार नमस्कार करते हैं। पुनः पुनः आदेश करते हैं। □

श्री सिद्ध योगी अचल अचम्भेनाथ जी

अचल अचम्भेनाथ जी

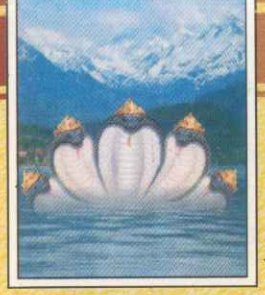

मूल स्वरूप शेष भगवान

श्री नवनाथ सिद्ध दर्शन में पंचम दर्शन सिद्ध योगी अचल अचम्भेनाथ जी देते हैं। इन्हें शेष स्वरूपी एवं वायु तत्व के अवतार माने जाते हैं। समस्त सृष्टि के यह आधार हैं।

एक बार देवताओं और दैत्यों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था, जिसमें चौदह रत्न उत्पन्न हुए, प्रथम हलाहल विष उत्पन्न होते ही सृष्टि में हाहाकार मचा अतः आदिनाथ जी ने उसे प्राशन किया। जब उन्हें काया में दाह होने लगा तब उसे शीतल करने के लिये शीश पर चंद्रदेव तथा गले में शेष भगवान को धारण किया तब वह हलाहल कण्ठ में ही अचल रहा भगवान नीलकण्ठ हो गये और शीतलता के लिये हिमालय नीलकण्ठ पर्वत पर ६० हजार वर्ष तक तपस्या की तब शेष नागराज ने अपने दातों में जहर को धारण किया धीरे-धीरे आदिनाथ जी योग द्वारा वह दाह शीतल हो गया। अतः आदिनाथ जी ने शेष भगवान को कहा कि वर मांगो मैं प्रसन्न हूं। शेष भगवान ने आदिनाथजी का योगी रूप जती रूप को देखा था, उन्होंने वही नाथ स्वरूप को वरण किया। तब आदिनाथ जी ने कहा हे शेषराज तुम पाताल लोक के राजा बनोगे तुम सृष्टि को शीश पर धारण कर उसका आधार बनोगे और सन्तोषनाथ विष्णुजी का आसन बनोगे। तुम जती कहलाओगे समस्त प्राणी के योग प्रणाली में तुम कुण्डलिनी रूप में स्थित होगे योग द्वारा जब शरीर में मन्थन होगा तब तुम जागृत होकर समस्त प्राणी, योगियों तथा देवी देवताओं को अमरत्व दोगे। तुम्हारे कारण मेरे कण्ठ में हलाहल अचल रहा और दाह को शीतल किया अतः तुम अचल अचम्भेनाथ नाम से मृत्युलोक में विख्यात होगे और मेरे नाथ स्वरूप को प्राप्त करोगे, लोग तुम्हें पूजेंगे। समय-समय पर तुम और भी नाथ स्वरूप अवतार लोगे। नागनाथ रूप से भी लोग तुम्हें पूजेंगे। तुम महायोगी

महाज्ञानी महासिद्ध एवं चमत्कारी योगी बनोगे, तथास्तु कहते ही आदिनाथ जी अंतर्ध्यान हो गये। तब शेष स्वरूपी अचल अचम्भेनाथ जी सातवे पाताल चले गये और अनन्त वर्ष तक तपस्या करते रहे। उस तपोबल एवं योग ज्ञान द्वारा उन्होंने पृथ्वी को शीश पर धारण किया, भगवान विष्णुजी की शय्या बने, समुद्रमंथन में वासुकी नाग बनकर मंथन के लिये रस्सी बने अपार शक्ति एवं ब्रह्मचर्य के कारण उन्हें जती कहा गया। योगीओं के योग में उन्हें कुण्डलिनी का रूप मूलाधार चक्र में दिया गया है। वह उच्चकोटी के तांत्रिक महाज्ञानी महायोगी है। नाथ सिद्धों के तंत्र-मंत्र कार्य में वह कवच तथा सुरक्षा का कार्य करते हैं। अचल अचम्भेनाथजी के नाम मंत्र से जहरीले नागों के जहर उतरते हैं। शेष भगवान ने अपनी बहन जगत्कारू का जगत्कारू नामक ऋषी से विवाह कर उनके पुत्र आस्तिक द्वारा राजा जन्मेजय के तक्षक महायज्ञ में अष्टकुली नागों की रक्षा करवायी। भर्तृहरिनाथ जी को नागराज से भेंट करवायी। पाताल के कालासुर मत्स्यासुर के वध किये। गुरू गोरक्षनाथ जी ने नेपाल में १२ वर्ष नागासन वायु एवं वरूण देवता के स्तंभन मंत्र में अचल अचम्भेनाथ जी का विशेष सहकार्य लिया था। इन्होंने तिब्बत में नागार्जुननाथ को प्रत्यक्ष दर्शन देकर कापालिक विद्या प्रदान की थी।

त्र्यम्बक कुम्भ के पर्व पर जब नवनाथ चौरासी सिद्ध अनंत कोट सिद्धों का मेला लगा था तब तंत्र योग, मंत्र योग पर उपदेश करके उन्होंने नाग स्तंभन, नागवायु स्तंभन, नागार्षक, नाग कवच, नाग कीलक, नागास्त्र नागबान आदि दिव्य मंत्र एवं उपासना-साधना सिद्धों को सिखाया। वह वायु स्वरूप में पवन सिद्धि प्राप्त भ्रमण करते थे। वह पृथ्वी पर श्री शैल श्रृंग गोहाटी जंगल क्षेत्र में तपस्या में रहते हैं। सूक्ष्म रूप वहां वास्तव्य है जोकि नाथ सिद्ध योगीओं को दर्शन देते हैं।

एक बार तिब्बत पहाड़ी में अचल अचम्भेनाथजी घोर तपस्या कर रहे थे। वहां एक गरीब मीनपा बेलरूपा नामका कुटुंब रहता था। नाथ जी को वह रोज दूध-चना खिलाते थे। एक दिन वह दूध चना नहीं दे सके, नाथ जी को भूख लगी तो

बेलरूपा की स्त्री ने अपने आंचल से दूध निकाल कर उन्हें पिलाया था प्रसन्न होकर अचल अचम्भेनाथ जी ने उन्हें दिव्य दृष्टि दी और उसके पति को राजा बनने का आशीर्वाद दिया, आगे दिव्य दृष्टि से उन्हें एक गुफा में धन प्राप्त हुआ और उन्हें तिब्बतीय क्षेत्र में राज्य प्राप्त हुआ। एक बार नेपाल में अचल अचम्भेनाथ जी तपस्या में लीन थे १२ पत्तनी के नागराज को दर्शन लाभ हुआ, नाथ जी ने अपने जटा की बभूत झाड़कर नागरानी को दी उस प्रसाद से उन्हें नागकन्या हुई उसका नाम नागजा रखा। आगे उसका विवाह मत्स्येन्द्रनाथ जी के शिष्य मीननाथजी से किया था। गोगा पीर की पत्नी सिरीयल को जब नाग ने काटा था तब गोरक्षनाथ जी ने अचल अचम्भेनाथ जी की सहायता से उसे जीवन दान दिया था और अचल अचम्भेनाथ जी ने वहीं कामरू (आसाम) प्रदेश में दारूण तपस्या की। अचल अचम्भेनाथ जी अजर अमर काया सिद्ध हैं। योगी को मूलाधार चक्र में ध्यान करना चाहिये तथा मूल बन्ध लगाकर त्रिपुटी में ध्यान लगाने से अचल अचम्भेनाथ जी स्व स्वरूप या शेष रूप में दर्शन अवश्य देते हैं। निश्चित ही वह नवनाथ सिद्धों में महान सिद्ध हैं।

-: गायत्री मन्त्र :-

ॐ ह्रीं श्रीं अं अचम्भेनाथाय विद्महे, शेष स्वरूपाय धीमही तन्नो निरन्जनः प्रचोदयात।

अथवा

ॐ श्री अचल अचम्भेनाथाय नमः

उपरोक्त में से किसी एक मंत्र का १०८ बार नित्य जप करना चाहिये।

उन सिद्ध योगी अचल अचम्भेनाथ जी को हम बारंबार नमस्कार करते हैं। पुनः पुनः आदेश करते हैं। □

श्री सिद्ध योगी गजबेली राजकन्थड़नाथ जी

गजबेली गजकन्थड़नाथ जी

मूल स्वरूप श्री गणेश जी

नमस्ते गजकन्थड़ाय नाथ रूपाय ते नमः। भक्त प्रियाय देवाय नमस्तुभ्य विनायकाः।।

छटे दर्शन नाथ सिद्ध योगी गजबेली गजकन्थड़नाथ जी के होते हैं। जो श्री गणेशजी के अवतार स्वरूप माने जाते हैं। एक बार कैलाश लोक में माता पार्वती जी की स्नान करते समय इच्छा हुई की मेरी रक्षा करने वाला भी कोई हो जो मेरे पुत्र रूप में हो, तब उन्होंने चन्दन उटी मली का गोला बनाकर उससे सुन्दर बालक रूप पुतला बनाया, प्राण संजीवन मंत्र से चेतन किया। सुन्दर पुत्र देख पार्वती अत्यंत हर्षित होकर कहा हे पुत्र देखो मेरे स्नान करने तक मेरे स्नान कक्ष में कोई ना आ पाये और बालक के हाथ में अंकुश देकर स्नान कक्ष में चली गयी। मातृ आज्ञा से बालक वहीं द्वार पर खड़ा होकर रक्षा कर रहा था इतने में स्वयं शिवजी बनखण्डी से आये तब बालक ने उन्हें रोका उनका वाद हुआ फिर युद्ध हुआ त्रिपुरारी ने अपने त्रिशूल से बालक का शीश काट दिया। यह देखकर पार्वती दुखी हुई, शिवजी को पता चला कि यह अपना ही पुत्र है, उन्होंने गणों को आदेश दिया वन में जाओ और प्रथम दर्शनी जो भी प्राणी मिलेगा उसका शीश ले आओ, गणों ने हाथी का शीश ला कर दे दिया। भगवान शिव ने वह शीश बालक को लगाया और उसे जीवित किया। आनंदित शिव पार्वती ने उसका नाम श्री गणेश, गणपती, गजानन आदि रखा और तब देवी-देवता, गण, नारद, इन्द्र, ब्रह्मा तथा विष्णु आदि सभी ने श्री गणेश जी का दर्शन किया। अतः श्री गणेश जी शिव आदिनाथ जी के तपस्वी-तेजस्वी नाथ स्वरूप देखकर विनती कर बोले की हे भोलेनाथ जी मेरा नमस्कार स्वीकार करो। मुझे माता जी ने यह रूप दिया अब आप भी मुझे आपका यह नाथ स्वरूप वरण कीजिये आपको देखकर मुझे वैराग्य उत्पन्न हुआ है। आप सद्गुरू जी रूप में मुझे उपदेश दीजिये, तब सोचकर आदिनाथ जी ने कहा हे बुद्धि वन्त गणेशा मेरा यह नाथ स्वरूप तुम्हें

अवश्य प्राप्त होगा, आगे मृत्युलोक में गजबेली गजकन्थड़नाथ नाम से लोक तुम्हारी अग्रपूजा करेंगे। आप योग महाज्ञान, तपस्या ऋद्धि-सिद्धि ज्ञान वैरण्य को प्राप्त करके नाथ योग ज्ञान का प्रचार-प्रसार करोगे, मुक्ति मोक्ष का मार्ग दर्शन करोगे आप ज्ञान, विद्या, बुद्धि के देवता माने जाओगे, आप ऋद्धि सिद्धि से भण्डार भरोगे सृष्टि में सर्व शुभकार्य के प्रारंभ में प्रथम आपको ही पूजनीय मान मिलेगा। तदुपरान्त गणेश जी ने अनेक लीलाएं की उन्होंने योग शक्ति से अष्ट विनायक रूप में अष्ठ असुरों का वध किया। पृथ्वी परिक्रमा, ऋद्धि-सिद्धि से विवाह, रावण से आत्मलिंग छीनना, वेदव्यासजी सन्मुख गीता रचना करना ऐसी अनेक लीलाएं और कार्य किये। एक बार गुरू गोरक्षनाथ जी भ्रमण करते हुए गण राज्य, गणेश लोक में पधारे और श्री गणेशनाथ जी के संग एकान्त में उन्होंने सन्त संग किया। उसी काल में उन्हें नाथ स्वरूप को धारण करने का स्मरण गुरू गोरक्षनाथ जी ने बताया। अतः ॐकार आदिनाथ जी के वरदान प्राप्त गणेश जी कच्छ भुज प्रदेश में कन्थड़ कोट स्थान में प्रगट हुए वहां सागर किनारे २१ हजार वर्ष तप किया। वह प्रत्यक्ष शिव-शिवा के पुत्र एवं प्रिय शिष्य थे। उन्होंने योगसाधना प्राणायाम चक्र जागृति कुण्डलिनी योग नादयोग लय योग करके अनेकों चमत्कार किये। अनेकों साक्षात्कार करके योग महाज्ञान का प्रचार प्रसार किया। एक बार कच्छ प्रदेश के राजा ने उन्हें तप-साधना का आसन हटाने को कहा क्योंकि वहां उन्हें एक किला बनाना था और वहाँ कोट बनाने लगे, कन्थड़नाथ जी ने अपने चमत्कार से उसे गिरा दिया वे दिन में बनाते थे रात्रि में वह कोट टूट कर गिर जाता था, ऐसा सात बार हुआ अन्त में राजा शरण में आ गया और उपदेश लेकर शिष्य बन गया। उसी समय एक बार एक किसान ने कन्थड़नाथ जी को कहा मेरे बावड़ी के कुंए में जल नहीं है, खेती कैसे करें? दया के सागर नाथ जी ने योग चमत्कार से गंगा-जमना-सरस्वती को आमंत्रण देकर बुलाया कुंए में जल भर गया। इसी किसान का वसु नाम का पुत्र था, वह कन्थड़नाथ जी का शिष्य बन गया और गुरू आदेश अनुरूप उसी कुएं के जल में खड़ा होकर घोर तपस्या की। वह सिद्ध आत्मदर्शी शिष्य विख्यात हुआ।

कन्थड़नाथ जी ने अनेक दीन दुखियों को सुख दिया, ऋद्धि सिद्धि से भण्डार भरे। अपने आत्मानुभव योग को सिखाया। इस प्रकार उस क्षेत्र के राम और पवन नामक युवक अनाथ थे उन्हें दीक्षा देकर शिष्य बनाये। गुरू कृपा से रामनाथ ने हिमाचल पर्वत में तपस्या की तो पवननाथ ने पवनाहारी बनके जंगल में योग तपस्या की। एक बार वहां के क्षत्रीय राजा का कुंवर नाम का एक राजपुत्र था। जरा व्याधि के कारण राजा ने उन्हें कन्थड़नाथ जी के पास रखा, इलाज होने पर उसने भी शिष्य बनकर योग साधना की उसे कन्थड़नाथ जी ने अपनी कृपा से अमर कर दिया। उन्होंने अपने शिष्य-भक्तों पर कृपा कर ऋद्धि-सिद्धि नवनिधि को प्राप्त कराया। उन्होंने सम्पूर्ण चौदह भुवन भ्रमण किया। अंतरिक्ष ज्ञान, विज्ञान शास्त्र, जड़ी-बूटी आदि सर्वगुण-ज्ञान सम्पन्न नाथ जी ने नाथ योगज्ञान का अनोखा प्रचार किया। नाथ सिद्धों के योग प्रणाली में गजबेली गजकन्थड़नाथ जी का मूलाधार चक्र में स्थान है। कुण्डलिनी योग जागृति में प्रथम मूलाधार चक्र जागृति करके प्रथम मान दिया जाता है। जिससे ज्ञान, वैराग्य और ऋद्धि-सिद्धि की योगियों को प्राप्ति होती है। त्र्यम्बक कुम्भ मेले में उन्होंने मूलाधार चक्र जागृति के अनुपम उपाय ज्ञान विज्ञान विश्लेषण कुण्डलिनी अनुभूति, इन्द्रिय दमन, साम्प्रत भाव समाधि आदि विषय पर अनन्त कोट सिद्धों को उपदेश दिया एवं उनका मार्ग दर्शन किया। निश्चित वे महान योग सिद्ध नाथ योगेश्वर हैं।

गायत्री मन्त्र :-

ॐ ह्रीं श्रीं गं गं गजबेली गजकन्थड़ाय विद्महे, गणेश रूपाय धीमही तन्नो निरन्जनः प्रचोदयात्।

अथवा **ॐ श्री गजबेली गजकन्थड़नाथाय नमः**

उपरोक्त में से किसी एक मन्त्र को १०८ बार नित्य जप करना चाहिये।

ऐसे सिद्ध योगी गजबेली गजकन्थड़नाथ जी को हमारा बारंबार नमस्कार है, पुनः पुनः आदेश करते हैं। □

श्री सिद्ध चौरंगीनाथ जी महाराज (पूरन भगत) चन्द्र अवतार

चौरंगीनाथ जी

मूल स्वरूप चन्द्र भगवान

श्री नवनाथ सिद्धों में सिद्ध योगी चौरंगीनाथ जी अजर अमर काया सिद्ध नाथ योगेश्वर हैं। चन्द्रदेवता के अवतार एवं अठराभार वनस्पति के स्वरूप भी माने जाते हैं।

एक बार जब देवताओं और दैत्यों के समुद्र मंथन से निकला हुआ हलाहल आदिनाथजी द्वारा प्राशन करने के कारण होने वाले अग्निदाह को शान्त करने के लिये आदिनाथ जी ने कण्ठ में शेष तथा मस्तक पर चन्द्रदेवता को धारण किया था। जब वह नीलकण्ठ पर्वत पर साठ हजार वर्ष तक ध्यान में विराजे तब चन्द्रदेवता की उनकी काया में शीतल अमृत वर्षा होती रही और आदिनाथ जी के हलाहल का दाह शिथिल होकर वह शान्ति को प्राप्त हुए। अतः प्रसन्न होते हुए आदिनाथ जी ने चन्द्रदेवता की स्तुति की, स्तुति सुनते हुए चन्द्रदेव को अभिमान वश विचार आने लगे कि मैंने ही आदिनाथ जी को दाह से शिथिलता प्रदान की है, मैं सोलह श्रंगार हूं एवं आदिनाथ जी के शीश पर शोभायमान होकर बैठा हूं। जब शेष नागराज ने आदिनाथ जी से नाथ दीक्षा उपदेश एवं वरदान लिया तब चन्द्र के मन में इर्ष्या उत्पन्न हुई कि मैं भी दीक्षा लूं अतः उन्होंने आदिनाथ जी के नाथ स्वरूप को तथा योग दीक्षा को मांगा तब आदिनाथ जी कहने लगे कि हे चन्द्रमा तुम्हें मेरा नाथ स्वरूप अवश्य प्राप्त होगा, किन्तु तुमने ईर्ष्या एवं अहंकार वश याचना की है अतः तुम जिस माता पिता के यहां जन्म लोगे उस मातृ पितृ सुख से वंचित रहोगे वही मातृ पितृ तुम्हारे हाथ-पैर कटवाकर तुम्हें जंगल में रखेंगे, वहीं तुम्हें मेरी तपस्या करनी होगी तब मेरे शिष्य मत्स्येन्द्रनाथ एवं मेरे ही स्वरूप गोरक्षनाथ तेरा उद्धार करेंगे और तब तुम्हें मेरा नाथ स्वरूप प्राप्त होगा। इस प्रकार शाप-उशाप एवं आशीर्वाद सदृष चन्द्र ने सॅलकोट के राजे शालिवान के परिवार में पुत्र

रूप में अवतार लिया उसका नाम पूरणमल रखा, बचपन में वह गुरूकुल में रहे, इस समय काल में राजा ने विमाता नामक स्त्री से दूसरा विवाह किया, जब पूरणमल १५-१६ साल की उम्र में गुरुकुल में से राजमहल में वापस आये तो दिखने में पूरण अत्यंत सुन्दर थे अतः राजा की दूसरी पत्नी विमाता इसे देखकर आसक्त हुयी और जब एकान्त में पूरणमल को चाहने लगी। किन्तु पूरण ने विरोध करते हुए माता कहकर आदर से नमस्कार किया। अतः प्रतिशोध लेने के विचार से विमाता ने उस पर झूठा कलंक लगाकर उसी के पिता शालिवान द्वारा सजा देकर उसके हाथ-पैर कटवाकर जंगल में कुएं में फेंक दिया। पूरण ने उसी अवस्था में बारह साल "ॐ नमः शिवाय" मंत्र से तपस्या की। एक दिन मत्स्येन्द्रनाथ जी और गोरक्षनाथ जी घूमते हुए वहां पहुंचे, वहां उन्होंने अपने यौगिक चमत्कार से उसे पूर्णांग किया, नाथ दीक्षा दी और उसका नाम चौरंगीनाथ रखा। गुरू गोरक्षनाथ जी ने उन्हें सम्पूर्ण जड़ी बूटी एवं १८ भार वनस्पतियों का ज्ञान प्रदान किया एवं उन्हें तंत्र मंत्र, योग सिद्धियां, महायोगज्ञान एवं चमत्कारों से भरपूर पूर्ण किया। चौरंगीनाथ जी ने सर्वत्र भ्रमण किया और अपने योग चमत्कारों से प्रचार प्रसार किया। एक बार चौरंगीनाथ जी तपस्या में बैठे हुए थे, जंगल मार्ग से कुछ व्यापारी व्यापार हेतु कीमती सामग्री ले जा रहे थे, चौरंगीनाथ जी ने सहजभाव से पूछा, क्या ले जा रहे हैं? स्वार्थ बुद्धि से उन्होंने कहा हम कोयले के व्यापारी हैं अतः बाजार जाकर देखा तो सही में उनकी सभी सामग्री कोयला हो गयी, घबराये हुए व्यापारी पुनः उनकी शरण में आये तब श्री नाथ जी की कृपा से सब सामग्री पूर्ववत हो गयी। बारह साल बाद वह राजगृही स्थलकोट गये सगी माता पुत्र विरह दुख से अंधी हो गयी थी चौरंगीनाथ जी के चमत्कार व कृपा से उनकी दृष्टि पुनः लौट आई। अपनी सौतेली माता को पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दिया। चौरंगीनाथ जी अलख निरन्जन शिव साक्षात्कारी, आत्मदर्शी, महाज्ञानी योगसिद्ध महात्मा हैं। उन्होंने प्राण संकली ग्रंथ की रचना की वे उत्तम लेखक एवं कवि थे। उनका अनेक स्थानों पर तपस्थली मठ है। सॅलकोट जंगल, हरिद्वार, जम्मू, पंजाब, हरियाणा में अस्थल बोहर में उनका मठ था यहां उन्होंने पाकल

पंथ चलाया जो नाथ सम्प्रदाय बारह पंथों में एक है। वह त्र्यम्बक महाकुम्भ में पधारे यहां उन्होंने अनन्त सिद्धों को ज्ञानोपदेश दिया। उन्हें यहां १८ भार वनस्पति स्वरूप कहा गया। उत्तर प्रदेश हिमालय क्षेत्र, महाराष्ट्र, कर्नाटक, बंगाल कामाख्या आदि स्थानों में उन्होंने अपना प्रभाव दिखाया। अनेक शिष्य बनाये। जम्मू कश्मीर में सिद्ध काकचण्डीनाथ उनके प्रिय शिष्य थे।

सिद्धों का मानना है कि चातुर्मास में मौन साधना साधके सिद्ध चौरंगीनाथ जी का मंत्र जप करने से वाचा सिद्धि प्राप्त होती है। इसी प्रकार इनकी विशेष तंत्र पूजा-शक्ति करने पर वनस्पति अर्थात जड़ी बूटियों का विशेष ज्ञान होता है।

नाथ सिद्ध योगेश्वरों के कुण्डलिनी योग में जब मस्तक में चन्द्र चक्र जागृति होती है तब योगी अमृतपान करते हैं वहां सिद्ध योगी चौरंगीनाथ जी का अनुष्ठान है। कुम्भक क्रिया रोककर चन्द्र चक्र में ध्यान स्थिर करने पर सिद्ध चौरंगीनाथ जी का साक्षात दर्शन होता है।अमृतपान से योगी अमरकाया होते हैं। वह गुरू गोरक्षनाथ जी के परम भक्त भी हैं।

निश्चित रूप से चौरंगीनाथ जी नवनाथों में एक प्रधान सिद्ध योगेश्वर हैं।

-: गायत्री मन्त्र :-

ॐ ह्रीं श्रीं चौं चौरंगीनाथाय विद्महे, चन्द्ररूपाय धीमही तन्नो निरन्जनः प्रचोदयात्।

अथवा

ॐ श्री सिद्ध योगी चौरंगीनाथाय नमः

उपरोक्त में से किसी एक मन्त्र को १०८ बार नित्य जप करना चाहिये।

उन सिद्ध योगी चौरंगीनाथ जी को हम बारंबार नमस्कार करते हैं, पुनः पुनः आदेश करते हैं। □

श्री सिद्ध योगी मत्स्येन्द्रनाथ जी

मत्स्येन्द्रनाथ जी

मूल स्वरूप मीन माया देवी

सिद्ध योगी मत्स्येन्द्रनाथ जी सम्पूर्ण नाथ सम्प्रदाय के दादा गुरूजी कहे जाते हैं। माया स्वरूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी अजर अमर चराचर माया रूप में विद्यमान हैं। ये प्रत्यक्ष ॐकार आदिनाथ जी के प्रिय शिष्य हैं। ये महायोगी, महाज्ञानी योग माया सिद्ध, मंत्र-तंत्र सिद्ध महातपस्वी, महा चमत्कारी, सर्व सर्वत्र अनुभव सिद्ध महापुरूष हैं।

एक ब्राह्मण परिवार में उन्होंने गण्डान्त (मूल) नक्षत्र में जन्म लिया। माता पिता एवं परिवार के लिये अशुभ होने के कारण उस बालक को क्षीर समुद्र में प्रवाहित किया वहां एक बड़ी मछली ने उन्हें निगल लिया जहां बारह वर्ष तक वह मत्स्यगर्भ में तपस्या करते रहे। इधर एक बार श्री नारदमुनि कैलाश पधारे और शिव के गले में मुण्डमाला देख कर स्तुति करने लगे। माता पार्वती ने इसका रहस्य नारदजी को पूछा जवाब में नारदजी ने कहा कि यह आपके पूर्व जन्मों के मुण्ड शिवजी ने धारण किये हैं अतः शिव आदिनाथ जी अजर अमर हैं। अतः एक बार माता पार्वती ने ॐकार आदिनाथ जी को अमरता का रहस्य पूछा तब आदिनाथ जी पार्वती को लेकर एकान्त में क्षीर सागर के किनारे ले गये वहां डोंगी पर बैठकर अमरता का महायोग एवं गुप्त ज्ञान बताने लगे, श्रवण करते-करते पार्वती को योग निन्द्रा आयी। तब उस डोंगी के नीचे जल में वही मछली थी जिसने उस बालक को निगला था। वह बालक भी यह ज्ञान श्रवण कर रहा था। अतः वह हुंकारा देने लगा। जब ज्ञानबाणी पूर्ण हुई। तब पार्वती ने कहा मैंने तो पूर्णरूप से ज्ञान सुना ही नहीं। तब हुंकारा कौन दे रहा था। अतः आदिनाथ जी ने अन्तर ध्यान से जान गये उन्होंने मत्स्येन्द्रनाथ जी को बाहर निकाला और नाथ योग में दीक्षित किया और

उन्हें पार्वती पुत्र कहकर उनका नाम मत्स्येन्द्रनाथ रखा। तत्पश्चात् मत्स्येन्द्रनाथ जी भ्रमण करते साधना करते रहे कामाख्या में उन्होंने शिवजी की घोर तपस्या करके शिवजी को प्रसन्न किया और उनसे उनके नाथ स्वरूप को वरण किया। वह पूर्ण नाथ दर्शनी होकर सर्वत्र भ्रमण करते रहे किन्तु उन्हें कोई योग्य शिष्य नहीं मिला। अतः उन्होंने पुनः शिव-तपस्या की और शिवजी को प्रसन्न कराके कहा कि आप ही मेरे शिष्य रूप में अवतार धारण करो। आगे शिव आदिनाथ जी ने गोरक्षनाथ रूप में अवतार लिया।

मत्स्येन्द्रनाथ जी ने कामाख्या क्षेत्र, आसाम, गोहाटी क्षेत्र में कौलज्ञान- शिव-शक्ति तंत्र की साधना की उन्होंने शाबर मंत्रों की रचना करके शिव शक्ति तथा देवी देवताओं से उन्हें सिद्ध कर लिया। नेपाल तथा तिब्बत क्षेत्रों में उन्होंने कुलाकुल, अकुल सकुल तंत्र साधना की यहां उन्हें अवलोकितेश्वर नाथ नाम से बुद्धयोगी रूप में मानते हैं। नेपाल मृगस्थली में नेपाल नरेश द्वारा नाथों का अपमान (छल) को होते हुए देखकर जब गुरू गोरक्षनाथ जी ने वर्षा मेघों को आसन के नीचे दबाकर तपस्या में लीन हो गये। उस कारण वर्षा न होने से नेपाल में १२ वर्षों तक भीषण अकाल पड़ा। तब उनके गुरू मत्स्येन्द्रनाथ जी को आमन्त्रित करने पर वह आये और नेपाल को अकाल मुक्त किया तथा नेपाल नरेश नरेन्द्र देव पर कृपा की यहां मछीन्द्रनाथ जी का उत्सव मनाते हैं। राजमुद्रा पर उन्हें अंकित किया। वह सम्पूर्ण ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त थे। प्रयागराज के राजा सत्यवान के मृत होने पर मत्स्येन्द्रनाथ जी ने अपनी काया गुफा में सुरक्षित रखकर राजा के शरीर में (परकाया) प्रवेश किया और वहां १२ साल राजवैभव भोगा। वहां से भी गोरक्षनाथ जी गुरूजी को साथ ले आये। इसी प्रकार योगीणी योग सिद्धि साधना के लिये वह रमनी स्त्री राज्य में महारानी मंगला और कमला के संग १२ साल रहकर कौल तन्त्र योग को भोगा। वहां से गोरक्षनाथ जी स्वयं उन्हें पुनः नाथ योग में लाये। मत्स्येन्द्रनाथ जी ने कौल मंत्र, योगिनी मंत्र, तंत्र-मंत्र योग, लय योग आदि का बहुत प्रचार प्रसार किया। अनेकों चमत्कार किये उनके अनेकों सिद्ध शिष्य थे, गुरू गोरक्षनाथ, चौरंगीनाथ, मन्जुनाथ, तारानाथ,

शाबरनाथ, कालनाथ, प्रभुदेव नाथ, प्रकाशनाथ, नारदा शारदा नाथ आदि सिद्ध शिष्य जो चौरासी सिद्धों में गिने जाते हैं। भारत भ्रमण में मुख्यतः कामरू कामाख्या गोहाटी, आसाम, बंगाल, कर्नाटक, महाराष्ट्र, पंजाब, जम्मू में भ्रमण किया उसी प्रकार नेपाल, तिब्बत, चीन, काबुल, कन्धार, सिन्ध क्षेत्र आदि क्षेत्रों में अपना प्रभाव चमत्कार दिखाये। मत्स्येन्द्रनाथ जी चारों युगों में विद्यमान हैं उन्हें पार्वती पुत्र कहते हैं कामाख्या क्षेत्र आसाम गोहाटी में सत्य-त्रेता-द्वापर युग में लोग उनके प्रत्यक्ष दर्शन लेते हैं किन्तु कलियुग में वह गुप्त रहेंगे, जो साधक कामाख्या में उग्र तपस्या करेंगे उन्हें उनका दर्शन होगा। नेपाल में अवलोकितेश्वर, आसाम गोहाटी में अर्थात कामख्या बंगाल में मत्सोदर, कर्नाटक का ओडिसा में सिद्ध नाथ या मीननाथ, सिंध पंजाब क्षेत्र में झूलेलाल, उत्तर प्रदेश, जम्मू, राजस्थान, महाराष्ट्र में वह मत्स्येन्द्रनाथ नामों से प्रसिद्ध हैं तथा अमर हैं। योगियों के लिये कुण्डलिनी योग जागृति में लिंगचक्र लिंगस्थान में मत्स्येन्द्रनाथ जी का अधिष्ठान है। जो कि इस चक्र जागृति से कुण्डलिनी उत्थान होकर योगी काम वासना क्रोध भय मदमोह आदि विकारों से मुक्त होकर माया से विरक्त होता है। मत्स्येन्द्रासन में बैठकर मत्स्येन्द्रनाथ जी का मंत्र जप करने से मत्स्येन्द्रनाथ जी दर्शन देते हैं। निश्चित रूप से मायास्वरूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी मायामय होकर भी माया से अलग विरक्त हैं।

-: गायत्री मंत्र :-

ॐ ह्रीं श्रीं मं मत्स्येन्द्रनाथाय विद्महे, मायास्वरूपाय धीमही तन्नो निरन्जनः प्रचोदयात्।

अथवा **ॐ श्री सिद्ध योगी मत्स्येन्द्रनाथाय नमः**

उपरोक्त किसी एक मन्त्र का १०८ बार नित्य जप करना चाहिये।

ऐसे सिद्ध योगी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी को हम बारंबार नमस्कार करते हैं, पुनः पुनः आदेश करते हैं। □

1 January 2004 4:32:46

शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी

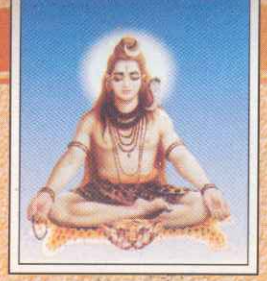

मूल स्वरूप शिव आदिनाथ जी

अलख निरन्जन, निराकार, निर्विकार, निरामय, निर्विकल्प तथा अगम्य अगोचर ऐसे श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी सृष्टि के लिये स्वयं सिद्ध एक कल्पतरू हैं। जनमानस के आत्मदेव हैं। नाथ सिद्ध एवं सभी साधु सन्त की नींव एवं मूलाधार हैं तो उनके योग मन्दिर के कलश हैं। न भूतो न भविष्यति ऐसे गुरू गोरक्षनाथ जी इस सृष्टि जगत में एक मिसाल हैं, रहस्य हैं। वह निर्गुण निराकार होते हुए भी सगुण साकार रूप में प्राणी मात्र के अत्यंत प्रिय हुए। गुरू गोरक्षनाथ जी स्वयं शिव आदिनाथ जी ही हैं जो ज्योति स्वरूप हैं।

पूर्वकाल सतयुग में जब गोहाटी कामख्या जंगल में मत्स्येन्द्रनाथ जी ने घोर तपस्या करके ॐकार आदिनाथ जी को प्रसन्न कर लिया और उन्हें अपने शिष्य के रूप में अवतार लेने का वर मांगा। तब आदिनाथ जी ने वचन बद्ध होते हुए कहा कि मैं अवश्य तुम्हारे शिष्य के रूप में प्रगट हो जाऊंगा। कैलाश लोक में एक बार शिव और शक्ति में विवाद हुआ शक्ति का कहना था कि जहां-जहां आप हैं वहां-वहां मैं अवश्य हूं। मैं माया-शक्ति सर्वत्र व्यापक हूं। सृष्टि मुझ माया बिन अधूरी है। तब आदिनाथ जी ने कहा कि जहां-जहां तुम हो वहां-वहां मैं अवश्य हूं। किन्तु जहां-जहां मैं हूं वहां-वहां तुम्हारा होना आवश्यक नहीं है। जैसे जहां-जहां घट है वहां- वहां मृत्तिका है किन्तु जहां-जहां मृत्तिका है, वहां-वहां घट का होना आवश्यक नहीं है। एक समय अवश्य आयेगा, जब तुम मेरे ऐसे स्वरूप को देखोगी जो (आप) माया विरहित, माया से निर्लिप्त माया से परे होगा। तदनंतर एक बार ॐकार आदिनाथ जी हिमालय के अलख क्षेत्र वायु लोक में ध्यान में बैठे थे।

ॐहंमेवःस्मि गोरक्ष मद्रूपं तन्नि बोधत। योग मार्ग प्रचाराय मायारूप मिद धृतम्।।

उन्होंने सोचा इस माया भ्रमित सृष्टि जगत के प्राणियों को आत्मज्ञान प्राप्त हो और वह अपने आपको परखकर मोक्ष मुक्ति मार्ग पर आरूढ़ हो जायें। इसलिये मुझे सगुण रूप अवतार लेना होगा, जो प्राणियों को समूची सम्पूर्ण महायोग ज्ञान तथा आत्मज्ञान एवं मोक्ष मुक्ति का अनुभव दे सके और ॐकार आदिनाथ जी ने अपने ही हृदय कमल से एक ज्योति उत्पन्न की और अपने ही नाथ स्वरूप को उस ज्योति में गोरक्षनाथ जी रूप में प्रागट्य किया, इस प्रकार माया से परे सम्पूर्ण जती सती रूप में अर्थात शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी का प्रगटन हुआ। उन्हें ध्यान स्थित छोड़कर शिव आदिनाथ जी अन्तर्लीन हुए।

गुरू गोरक्षनाथ जहां तपस्या कर रहे थे वहां का परिसर, वातावरण बहुत ही सुन्दर आह्लादपूर्ण, चैतन्य युक्त, प्रसन्न एवं मन मोहक था। वहां का निसर्ग-प्राणी-साधु सन्त सभी गुरू गोरक्षनाथ के भजन में लीन थे। एक समय शिव-शक्ति वहां भ्रमण तथा अवलोकन करते हुए आ पहुंचे। आदिमाया शक्ति यह देखकर बड़ी आकर्षित हुई उन्होंने गुरू गोरक्षनाथ जी की परीक्षा लेना चाहा, अतः ध्यानस्थ अटल गोरक्षनाथजी के सन्मुख जाकर अपने माया शक्ति द्वारा कड़ी से कड़ी परीक्षा ली किन्तु कोई परिणाम नही निकला, गोरक्षनाथ जी अपने ध्यान में अटल रहे। अन्त में पार्वती हारकर शरण में आयी। तब शिव आदिनाथ जी ने कहा हे सती! गोरक्षनाथ मेरा ही स्वरूप है अतः मैं ही गोरक्षनाथ हूं। जो माया से परे, जो माया विरहित है मैंने पूर्वकाल में अपने शिष्य मत्स्येन्द्रनाथ जी को उनका शिष्य रूप में अवतीर्ण होने का वचन भी दिया था। अतः गोरक्षनाथ जी गुरू प्राप्ति के लिये भ्रमण करते हुए क्षीर सागर तट पर आये वहां समाधिस्त मत्स्येन्द्रनाथ जी को सद्गुरू प्राप्त कर, राप्ती क्षेत्र में कर्ण छेदन किया और गुरू शिष्य दोनों ने हिमालय क्षेत्र स्वर्गलोक कैलाश की ओर प्रस्थान किया।

वह देवलोक में, शिव लोक, बैकुण्ठ, ब्रह्मलोक, स्वर्ग लोक, मृत्यु लोक, पाताल लोक, सप्त पुरिया, १४ भुवन, जल, थल, अगन, आकाश पवन सर्वत्र भ्रमण किया। अपने योग चमत्कार से ऋद्धि-सिद्धियों से सभी देवी देवताओं, सुर-असुर, नर-नारियों के हृदय स्थान में श्रद्धा युक्त इष्ट बने। ज्वाला, काली, दुर्गा, देवी पाटन हिंगलाज आदि शक्तियों

को अपने योग चमत्कार से प्रसन्न कर शक्ति पीठों की स्थापना की।

त्रेता युग में गुरू गोरक्षनाथ जी इरावति क्षेत्र गोरखपुर में प्रगट होकर प्रभु रामचन्द्र, लक्ष्मण, हनुमन्त को दीक्षा देकर मुक्त मार्ग योग ज्ञान दिया। द्वापर युग में जूना गढ़, प्रभास पट्टन, गोरख मढ़ी में प्रगट होकर भगवान श्री कृष्ण-रूक्मणि स्वयंवर में रूक्मणि कंकन बंधन सिद्ध किया वहीं तपस्या की, अन्त में पंच पांडवों को हिमालय में योग मार्ग से मुक्ति मार्ग दर्शाया। कलियुग में गुरू गोरक्षनाथ पेशावर किले में गोरख (टिल्ला) खट्टी में प्रकट होकर जन जनता की रक्षा कर योग मार्ग के लिये प्रेरित किया। उन्होंने अखण्ड भ्रमण किया नेपाल मृगस्थली में वर्षा स्तंभन कर के तपस्या की और १२ वर्ष अकाल ग्रस्त नेपाल में मत्स्येन्द्रनाथ जी ने आकर आकाल मुक्त कराया। जबसे नेपाल देश गोरक्षनाथ जी को राष्ट्र इष्ट मानते है। डांग (नेपाल) में राजा रत्न परीक्षक को रतननाथ नाम से शिष्य बनाया। सैलकोट में पूरण को पूर्णांग करके चौरंगीनाथ नाम से शिष्य बनाया अपने योग ज्ञान का तिब्बत में प्रभाव दिखाकर वज्रयन, कापालिक, बौद्धवामाचारियों को योग मार्ग में लाया वहां नागार्जुन नाथ को शिष्य बनाये। उन्होंने ९९ कोटी राज-राजेश्वरों को अपने शरण में लाया-राजा भर्तृहरि, गोपीचन्द, बालक दीवट, कानिपानाथ इत्यादि शिष्य बनाये। राजा सत्यवान के शरीर में परकाया प्रवेश करके तथा त्रिया राज्य से अपने सतगुरू मत्स्येन्द्रनाथ जी को वापसी ले आये। मीननाथ को जीवनदान दिया। सुवर्ण पर्वत बनाया, देवी देवता को अखण्ड भण्डारा दिया। सतगुरू प्रसन्नता के लिये भोजनदान के लिये अपनी आंख तक दान कर दी थी। वे परम गुरू भक्त थे। मैनावती और गोपीचन्द को कानिपा और जालंधर के क्रोध से बचाया। दयानाथ, दुरंगतनाथ, विक्रमादित्य बाप्पा रावल सिद्ध चर्पटीनाथ, धर्मनाथ आदि शिष्यों को योग-महाज्ञान देकर जगत् विख्यात किया। राजस्थान बीकानेर गोगा पीर पर कृपा की। जम्मू में खूनी राजा को शरण में लाया गोरक्षनाथ जी की कृपा से गहनीनाथ, अमरनाथ प्रकट हुए। ओडिसा में मल्लिकानाथ गुजरात में मानिकनाथ को

ॐकार ज्योर्तिर्गोक्षं नित्यं ध्यायन्ती योगिनः।
मुक्तिं च मोक्षदां चैव गोरक्षाय नमो नमः।।

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड गोरक्षं स चराचरम्।
दर्शनम् मुक्ति लाभं च तस्मै श्री गोरक्षाय नमः।।

श्री गोरक्ष अवतार सिद्ध शिरोमणि श्री बाबा मस्तनाथ जी महाराज (मठ अस्थल बोहर)

सिद्ध योगी बनाया। नागोट में जम्भनाथ, जसनाथ केशवदास हरिदास , नेपाल नरेश द्रव्यशाह पृथ्वीनारायण शाह, हीर रांझा आदि शिष्यों पर कृपा की। अस्थल बोहर हरियाणा में बाबा मस्तनाथजी के रूप में अवतार लेकर जन कल्याण किया और भी काबुल कन्धार तिब्बत समस्त एशियाई खण्ड में अफगानिस्तान मध्य ऐशिया समुद्र द्वीपों में वह विद्यमान रहे। इस प्रकार चतुर्युगों में प्रकट होकर प्राणीमात्र को योगामृत प्रदान करके कालदण्ड से खण्डन कर उनको मोक्ष मुक्ति कल्याण पद में अवस्थित करते रहे। अपने हठयोग, लय योग, नाद योग, भक्ति योग, आदि अनेकों सिद्धान्तों से आत्मा ही ईश्वर है यह सिद्ध किया। अधर्म-वाममार्ग एवं वृढ़ीवाद को विरोध कर अपनी योग प्रणाली सिद्ध की। ऐसे गोरक्षनाथ ज्योति स्वरूपी शिव स्वरूपी अलख निरन्जन सर्वत्र सचराचर में विद्यमान हैं। अजर अमर हैं। उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, पंजाबी, शाबरी अनेक भाषाओं में ग्रंथ एवं काव्य रचना कर योग ज्ञान की नींव बनाई पिण्ड ते ब्रह्माण्ड पराशक्ति से सृष्टि उत्पत्ती से निजाशक्ति से अपराशक्ति से सूक्ष्मशक्ति से चेतना शक्ति कुण्डलिनी शक्ति उदभूत हुई पाँच तत्व गुणादि, इन्द्रियादि पिण्ड पर पिण्ड अपरम्पार परमपद शून्य-निरन्जन परमात्मा रूप आदि का विस्तार ज्ञान उन्होंने जनता को दिया।

इस प्रकार स्थूल एवं सूक्ष्म रूप में उन्होंने महान कार्य किये, सूक्ष्म रूप से प्राणी मात्र के आत्मरूप में वह विराजमान हैं। योग साधना करते हुए कुण्डलिनी जागृत करते हुए जब साधक तालु-चक्र सहस्त्रागार कमल जागृत करता है। तब प्रत्यक्ष गुरू गोरक्षनाथ जी का दर्शन करता है। जिसमें साधक में परिपूर्णता-परिपक्वता पूर्ण वैराग्य प्राप्त होकर समूचि सम्पूर्ण महाज्ञानी होता है। उसे नाथ सिद्ध योग ज्ञान, परमात्म परमतत्व परम ज्योति स्वरूप का ज्ञान पाकर वह कृतार्थ होता है और अन्त में मोक्ष मुक्ति को प्राप्त करता है। कलियुग में जिसे गोरक्षनाथ साक्षात्कार होता है, वह स्वयं सिद्ध हो जाता है। ऐसे सतगुरू गोरक्षनाथ जी की प्राप्ति हेतु निम्न मन्त्र का जाप अवश्य करना चाहिये।

-: गायत्री मन्त्र :-

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्षनाथाय विद्महे, शून्य पुत्राय धीमही तन्नो गोरक्ष निरन्जन प्रचोदयात।

अथवा

ॐ ह्रीं श्रीं गों हुं फट् स्वाहा।

अथवा

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष हुं फट् स्वाहा।

अथवा

ॐ ह्रीं श्रीं गों गोरक्ष निरान्जनात्मने हुं फट् स्वाहा।

अथवा

ॐ शिव गोरक्षनाथाय नमः

अथवा

ॐ शिव गोरक्ष योगी

उपरोक्त में से किसी भी एक मन्त्र का १०८ बार या कम से कम सवा घण्टा जाप नित्य करना चाहिये।

उस परम सतगुरू श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी को हम बारंबार नमस्कार। आदेश! आदेश!!आदेश!!! करते हैं।□

ॐ शिव गोरक्ष योगी

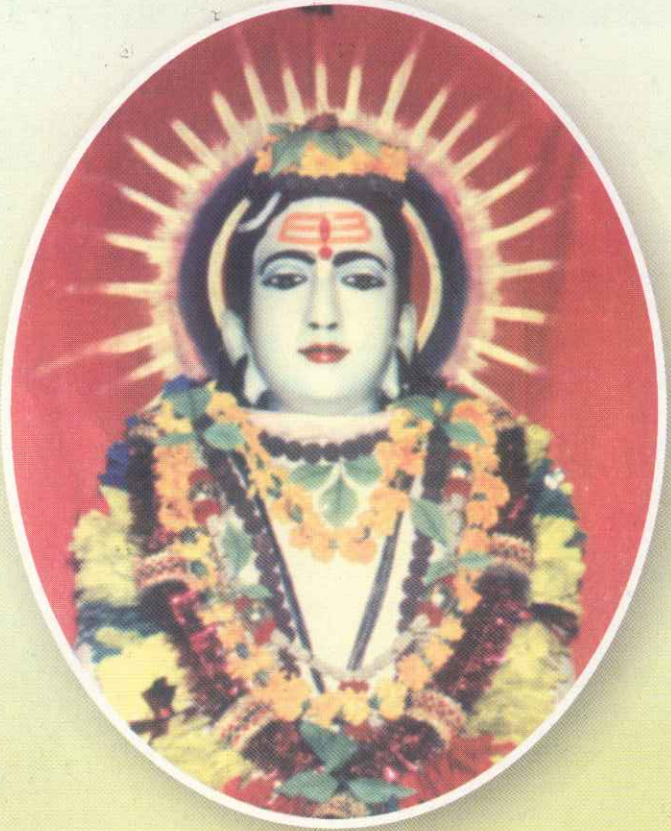

नवनाथ स्वरूप दर्शन

नवनाथ स्वरूप जाप (मन्त्र)

सत नमो आदेश । गुरू जी को आदेश। ॐ गुरूजी। ॐकार आदिनाथ ॐकार (ज्योति) स्वरूप बोलिये। उदयनाथ पार्वती धर्ती स्वरूप बोलिये। सत्यनाथ ब्रह्माजी जल स्वरूप बोलिये। सन्तोषनाथ विष्णुजी खड्ग खाण्ड तेज स्वरूप बोलिये। अचल–अचम्भेनाथ आकाश (शेष) स्वरूप बोलिये। गजबेलि गजकंथड़नाथ गणेश जी गजहस्ती स्वरूप बोलिये। ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ अठारह भार वनस्पति (चंद्रमा) स्वरूप बोलिये। माया स्वरूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ माया (मत्स्य) स्वरूप बोलिये। घटे पिण्डे नव निरन्तरे रक्षा करन्ते श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ बाल (श्री शिव) स्वरूप बोलिये। इतना श्री नवनाथ नाम मन्त्र जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथजी गुरुजी को आदेश। आदेश।।

"नवनाथ गायत्री मन्त्र"

ॐ श्री नवनाथाय विदमहे ज्योर्तिमयाय धीमही तन्नो अलख निरञ्जन प्रचोदयात

यह नवनाथ सिद्ध ॐकार आदिनाथ जी द्वारा प्रतिपादित है। अर्थात एक परम ज्योति प्रकट हुई फिर उससे नवनाथ ज्योति स्वरूप उत्पन्न हुए जो जगत उद्धार के लिये नाथ रूप में अवतरित हुए। नाथ सिद्ध नवनाथ प्राणिमात्र के सभी प्रकार के पापों, संकटों एवं दुखों का नाश करने वाले हैं। अपने भक्तों को ज्ञान प्रदान करके मोक्ष मुक्ति को प्राप्त करवाते हैं। अतः ऐसे नवनाथ सिद्धों की प्राप्ति दर्शन अनुभूति साक्षात्कार एवं कृपाशिर्वाद प्राप्ति के लिये अनेक साधन तथा मार्ग हैं। हमारे नाथ सिद्धों की शाबर मंत्र योग साधना भी एक अत्यंत प्रभावी साधना एवं शीघ्र फल दायक है। जो पूर्वकाल से प्रमाणित तथा पूर्ण अनुभव सिद्ध है।

मुख्यतः यह शाबर मंत्र योग साधना दो प्रकार की है। एक सगुण (द्वैत, बहिर्मुखी या दृष्टिगोचर) साधना तथा दूसरी निर्गुण (अद्वैत अन्तर्मुखी या अदृष्टीगोचर) साधना है।

सगुण साधना में इष्ट की पूजा, पाठ करना, यज्ञ हवन करना, अनुष्ठान, भजन, जागरण इत्यादि करना और इष्ट के प्रति अर्थात गुरू गोरक्षनाथ जी या नवनाथ जी के प्रति भक्ति भाव निर्माण करना, ऐसे भक्ति रस में जब परिपक्व अवस्था आती है तब उस भावातित भक्ति में भक्त पूर्ण पवित्र एवं विशाल अन्तकरण का हो जाता है। हरक्षण हर वस्तु में वह इष्ट का व्यापक अधिष्ठान देखता है। उत्तरोत्तर वह सुख-दुःख, पाप-पुण्य के परे अवस्था में जाते हुए मुक्त मोक्ष को प्राप्त होते हैं, उदा सन्त मीराबाई, कबीर, नानक जी, सूरदास, तुलसीदास, नामदेव, तुकाराम आदि सन्तों ने यह भूमिका निभाई है।

निर्गुण साधना में साधक मंत्र, जप, इष्ट का ध्यान (चिन्तन, मनन) करना, घण्टों अनुष्ठान करना इष्ट प्राप्ति के हट से

हठयोग (खडेश्वरी, त्यागी, तपस्वी, मौनी, इ.) करना इसमें काया, वाचा, मन, सक्षम एवं पवित्रता के लिये योगासन-आसन-प्राणायाम-मुद्रा-बंध-अष्ठांगयोग इत्यादि करते हैं। उत्तरोत्तर साधक खडदर्शन कुण्डलिनी योग ब्रह्मग्रंथी द्वारा आत्मानंद, विष्णुग्रंथी द्वारा परमानंद, एवं रूद्रग्रंथी द्वारा कैवल्यानंद को प्राप्त होते हैं। तथा आगे उनमन अवस्था, नादानुसंधान, शून्य समाधि तथा मुक्त मोक्ष अवस्था, ज्योति स्वरूप को प्राप्त कर लेते हैं। गुरू गोरक्षनाथ जी , नवनाथ सिद्ध, महावीर, गौतम बुद्ध, शंकराचार्य इ. महा साधकों ने यह भूमिका निभाई है। ऐसे अनेकों साधू सन्त योगी एवं महान साधक आगे चलकर जन जनता के मार्ग दर्शक बने, किसी के इष्ट बने, किसी के भगवान बने, किसी के उपदेशक तो किसी ने उन्हें अपने सद्गुरू रूप में अपनाया।

सतगुरू : आध्यात्मिक एवं परमार्थिक साधना तथा भक्ति एवं समूचे सतकर्मों को योग्य मार्गदर्शन तथा सहायता के लिये सतगुरू का होना अत्यावश्यक है। सतगुरू महिमा अपरम्पार है। देवी देवता अर्थात भगवान भक्त को केवल उसके कर्म अनुसार सुख-दुःख देकर उसे भक्त ही बना के रहते हैं। किन्तु सतगुरू अपने शिष्य को पूर्णत्व या परिपूर्ण पात्र बनाकर उसे अपने ही जैसा गुरू बना देते हैं। योग्य सतगुरू मुक्ति मोक्ष दाता होता है। देवी देवता तो प्रालब्ध वश किये कर्मों के फल ही देते हैं, किन्तु सतगुरू अपने आध्यात्मिक ज्ञान एवं शक्ति प्रभाव से तथा मार्गदर्शन एवं सहायता से अपने भक्त, शिष्य को सतकर्म करवा के उसके पूर्व संचित दुष्कर्मों का खण्डन या नाश करवा कर उसे ज्ञान और मुक्ति मोक्ष पथ पर ले जाते हैं। परम, परमात्मा, परमेश्वर, की पहचान सतगुरू ही करवाते हैं। अतः प्रथम प्राधान्य मान सतगुरू को ही दिया जाता है।

सतगुरू अर्थात सत यानी सत्य, "गु" यानी अधंकार (माया) से, "रू "याने प्रकाश (ज्ञान) की तरफ ले जाने वाले

व्यक्ति को सतगुरू कहते हैं। सृष्टि में ध्यानी, ज्ञानी, तपस्वी, हठयोगी, कर्मयोगी, तंत्र-मंत्र इत्यादि अनेक प्रकार के सतगुरू विद्यमान हैं। मूलतः सबका ध्येय आखिर मोक्ष मुक्ति ही होता है। जैसे अनेक नदियां, जलधारा अन्त में सागर को प्राप्त होती हैं, उसी प्रकार सब कुछ कर करा के उसे त्यागना और इसके उपरान्त मुक्ति को पाना ही सत्य जीवन प्रवाह है। कहते हैं गुरू छान के करो किन्तु ऐसा नहीं है। जो माया जंजाल में फंसा है वह क्या गुरू को छानेगा, इसके लिये व्यक्ति सुपात्र होना चाहिये और सुपात्रता गुरू बिना कैसे होए यह सतगुरू प्रति दृढ़ विश्वास एवं श्रद्धा होना अनिवार्य है। सच्चे सतगुरू की प्राप्ति को तो मनुष्य प्राणी का भाग्य कहाँ है। ॐकार आदिनाथ जी सम्पूर्ण प्राणीमात्र के आदि गुरू हैं, "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्" जीव-शिव का मिलन ही मोक्ष है। हमारी नाथ समाज प्रमाणित करती है कि नाथ सम्प्रदाय का प्रतिष्ठान शिव आदिनाथ द्वारा प्रारंभ हुआ है। जिन्होंने प्रथम उदयनाथ (पार्वती अवतार) तथा मत्स्येन्द्रनाथ जी (माया अवतार) को महायोग ज्ञानोपदेश दिया। आगे गुरू गोरक्षनाथ जी को उसका लाभ हुआ फिर नवनाथ सिद्धों को फिर चौरासी सिद्धों को तदनंतर अनन्त कोट सिद्धों को इस नाथ योग ज्ञान होकर अजर अमर हो गये। इस प्रकार गुरू शिष्य परम्परा से यह नाथ सम्प्रदाय चलता आया आज भी विस्तृत रूप में विद्यमान है। ऐसे गुरू शिष्य परम्परा में गुरू शब्द एवं नाथ योग साधना को विशेष प्राधान्य है गुरू शबद अर्थात गुरू मन्त्र कहा गया है।

मन्त्र एवं उसकी साधना :- गुरू शब्द, मन्त्र योग, साधना नाथ सिद्धों का मूलाधार है। वैसे मन्त्र योग साधना में वैदिक, वेदोक्त मन्त्र, शाबर मन्त्र, कापालिक मन्त्र, कौल या शैव मन्त्र, शक्ति मन्त्र, इत्यादि का समावेश है। अपितु शाबरी मन्त्र साधना नाथ सिद्ध सम्प्रदाय का मूल-महत्तम स्त्रोत है। जो कलियुग में स्वयंसिद्ध, अत्यंत प्रभावी एवं शीघ्र फलदाई होते हैं। अर्थात इसलिए शाबर-साधना के लिये समूल ज्ञाता ऐसे सतगुरू के मार्गदर्शन अत्यावश्यक है।

जप :- जप करने को चिन्तन एवं मनन करना कहा है। अर्थात (सतगुरू) शबद को एवं उसके अर्थ (भावार्थ) को समझते हुए बार-बार उच्चारण करने को मनन कहा है। वही शबद को मन्त्र कहा है और यही मन्त्र दृढ़ विश्वास एवं श्रद्धा (भक्ति) से या विशिष्ट उद्देश्य से चिन्तन करने को जप कहा है। अर्थात मन को अन्य विचारों से हटाकर शबद के प्रति एकाग्र करना चाहिये। इस मन की एकाग्रता के लिये कुछ नियमों का पालन करना एकाग्रता के लिये सहायक होता है। जैसे :- १- सच बोलना, २-सभी प्राणियों के प्रति अंहिसा भाव रखना, ३-दया-क्षमा-शान्ति में रहना, ४-स्वाभिमान एवं धीरज और धैर्य से रहना, ५- अपनों से एवं स्वयं से प्रामाणिक रहना, ६-मन/ चित्त के चेतन, शक्ति को काम, क्रोध, मद, मत्सर, ईर्ष्या आदि में खर्च नहीं करना, ७-सहनशीलता और सरलता युक्त जीवन अपनाना, ८-शरीर एवं मन शुद्ध तथा पवित्र रखना, किसी से कुटिल नीति, छल कपट नहीं करना, ९-सन्तुलित आहार या मित्ताहारी रहना, १०-हर तरह की परिस्थिति में खुश एवं सन्तोष वृत्ति में विचरणा, ११- तपस्या सदृश्य गर्मी-वर्षा दी तथा लाभ-हानि ने स्थिर रहना, १२-ईश्वर पूजन तथा सतसंग दृढ़शक्ति विश्वास में करना इ. के प्रति अपने को स्थिर रखना, १३-योग्य पात्र को दान करना, १४- सतगुरू सेवा करना तथा उनके उपदेश को धारण करना ऐसे सदाचार नियमों का पालन करने से बुरे संस्कारों से बचाव होकर मन शरीर को अच्छे संस्कार जागृत होते हैं। अन्यथा ध्यान-धारणा की साधना करते समय पूर्व बुरे संस्कार सामने आकर साधना में व्यत्तय निर्माण करते हैं। आगे साधना में इन अच्छे बुरे संस्कारों को मन/ चित्त से हटाने के लिये इन से विरोध कर हट से हठ योग करना होगा।

□

सत्गुरू

कलश

नवज्योतियों से
नवनाथ स्थापना

साधक का आसन

श्री नाथ सिद्धों का धूना

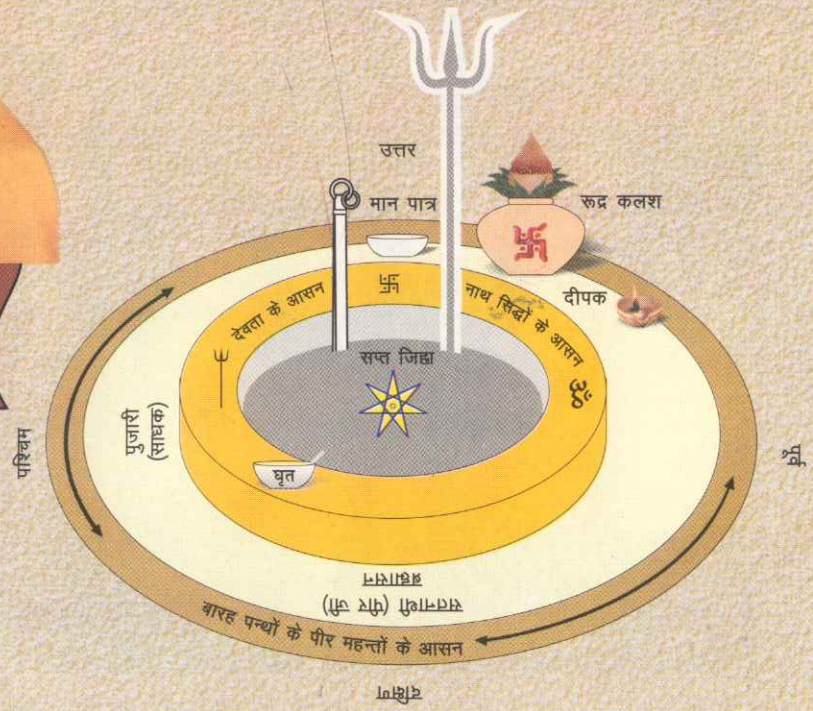

ॐकार नाथं त्रिकाल ज्ञानी, गोरक्ष मीन नाथ वंश सिद्धं।

विधि : मठ मन्दिर, घर मकान में, अपने पूजा स्थल को स्वच्छ सुन्दर, सुशोभित एवं पवित्र करें, केली के खम्बे, आम्र-निम्ब पत्तों से झण्डियां लगावें, सुंगन्धी पुष्प मालाओं से, रंगोलियों से सम्पूर्ण पूजा स्थल को सुन्दर सजाएं। भगवा ध्वज, मण्डप आदि तैयार करें। सुर्चिभूत होकर नियोजित स्थान पर नवनाथ प्रतिमा, मूर्ति या तस्वीर या श्री नवनाथ यन्त्र (सर्वतो रूद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र) स्थापन करें या तो एक चौकी के ऊपर या पाटला के ऊपर सुन्दर भगवे वस्त्र डालकर उसके ऊपर वटवृक्ष के या पीपल के नौ पत्ते रखें, उसके ऊपर (चिकनाई पृष्ठ पर) नौ बारीक पूजा की सुपारी एक एक पत्तों पर रखें या ९ रूद्राक्ष दाने नवनाथों के नाम से रखें। अतः प्रथम आसन लगायें, आसन बाघाम्बर या मृगछाला या कुशासन या कुछ ना मिले तो कम्बलासन लगावें, जो सुखासन हो। बिना आसन भूमि पर बैठना निषिद्ध है। अतः साधक पद्मासन या सिद्धासन लगाकर बैठे कुछ साधक इसके पूर्व कुछ योगासनों, मुद्राओं का अभ्यास करने के उपरान्त बैठते हैं, जिससे शारीरिक कफ, वायु, पित्तादि का निर्मूलन होता है एवं साधक सक्षम होकर बैठते हैं, ताकि वह ध्यान योग-एकाग्रता को सहायक हो।

अतः आसन ग्रहण करने के उपरान्त निम्न आसन लगाने का मन्त्र बोलें।

आसन लगाने का मन्त्र :- सत नमो आदेश। गुरू जी को आदेश। ॐ गुरू जी। सत्य की धर्ती सत्य का आकाश। सत्य की माला सत्य का जाप। सत्य का आसन सत्य का पूत। आसन बैठे योगी अवधूत। आसन ब्रह्मा इन्द्र। आसन बैठे हरि गोविन्द। आसन बैठे जपीये जाप, कोटि जन्म के उतरन्ते पाप। आसन बैठे सिंहासन बैठे, बैठे गिरी की छाया। पांच तत्व से

लें आसन बैठे सतगुरू सत्य का शबद सुनाया। बिना मन्त्र आसन लगाय सो योगी नरक को समाया। मन्त्र पढ़ आसन लगाय सो योगी अमरापुर समाया। श्री नाथ जी गुरू जी को आदेश। आदेश।

तदनंतर बाघाम्बर या मृगासन उपलब्ध होगा तो निम्न मन्त्र बोलें।

बाघाम्बर मृगछाला मन्त्र :- सत नमो आदेश। गुरू जी को आदेश। ॐ गुरू जी। अलष पुरूष बैठे आराधे। अपनी खाल खाल में मिलाय, जब मृगा की खाल पर आसन लगाय। श्वेतांबर पीताम्बर, बाघाम्बर, खाकम्बर, चीताम्बर और मृगछाला पर आसन लगायें। बिना मन्त्र पढ़े आसन पर बैठे ऐसा डूबे थाह न पावे। पढ़ मन्त्र आसन पर बैठे सो योगी अमरापुर जावे। नाथ जी गुरूजी को आदेश। आदेश।

तद उपरान्त विघ्नहारी गणेश जी को स्मरण करें और निम्न गायत्री मन्त्र बोलें

गणेश गायत्री (संक्षिप्त) :- सत नमो आदेश। गुरूजी को आदेश। ॐ गुरूजी। ॐ वक्र तुण्डाय विद्महे एक दन्ताय धीमही तन्नो गणेशाय प्रचोदयात। ॐ गं गं गणपति ये नमो आदेश। श्री नाथ जी गुरू जी को आदेश।

अतः साधक ने चौकी के ऊपर अपने सद्गुरू जी के प्रति एक कलश स्थापन करे जो हमारे किसी भी कर्म के प्रति साक्षी होते हैं। अतः गुरू स्मरण या गुरू मन्त्र स्मरण करके कलश के ऊपर अक्षद (चावल) चढ़ाकर स्पर्श करके कलश स्थापन करें इसी तरह चौकी के ऊपर के एक-एक सुपारी या रूद्राक्षों पर प्रत्येक (निम्न प्रकार से) नवनाथों के नाम लेकर अक्षद छोड़ें और स्पर्श करके स्थापन करें।

प्रथम १. ॐ आदिनाथाय नमो आदेश।

ॐ आदिनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

२. ॐ उदयनाथाय नमो आदेश।

ॐ उदयनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

३. ॐ सत्यनाथाय नमो आदेश।

ॐ सत्यनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

४. ॐ सन्तोषनाथाय नमो आदेश।

ॐ सन्तोषनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

५. ॐ अचल अचम्भेनाथाय नमो आदेश।

ॐ अचल अचम्भेनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

६. ॐ गजबेली गजकन्थड़नाथाय नमो आदेश।

ॐ गजबेली गजकन्थड़नाथ जी आवाहन स्थापयामि।

७. ॐ सिद्ध चौरंगीनाथाय नमो आदेश।

ॐ सिद्ध चौरंगीनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

८. ॐ मायारूपी मत्स्येन्द्रनाथाय नमो आदेश।

ॐ मायारूपी मत्स्येन्द्रनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

९. ॐ शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथाय नमो आदेश।

ॐ शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी आवाहन स्थापयामि।

अतः ॐ सोहं हंसाय विद्महे प्राण प्राणाय, धीमही तन्नो ज्योति प्रचोदयात।

यह मन्त्र कहकर प्रतिमा, कलश एवं सभी सुपारी या रूद्राक्षों के ऊपर सुवासिक जल (गुलाब जल) छिड़ककर लाल फूल चढ़ाकर प्राण प्रतिष्ठा करें।

अतः इन सभी की धूप, दीप, अगरबत्ति, जल, पंचामृत, गंध (चन्दन या भस्मी) अक्षद बिल्वपत्र, बिल्वफल, पुष्प, पुष्पमाला, भगवे वस्त्र, नाद जनेऊ, कुण्डल, इत्र इत्यादि से श्रद्धा युक्त भक्ति से पूजन करें दूध, कच्चारोट या पक्का रोट या पंचफल, या पंचमेवा का भोग लगावें।

अतः गुरू मन्त्र का जाप करें शक्यतो १०८ बार करे या गुरू मन्त्र नहीं होगा तो "ॐ शिव गोरक्ष योगी" इस शाबर बीज मन्त्र का जाप करे। यह सद्गुरू स्मरण या स्थापन या गुरू मंत्र जाप किसी भी साधन व धार्मिक कर्म अनुष्ठान या परमार्थिक कर्म के पूर्व करना अर्थात सद्गुरूजी को मान देना, आवाहित करना अत्यंत आवश्यक है अगर प्रत्यक्ष सद्गुरू उपस्थित होंगे तो उनकी पाद पूजन, आसन वासन पूजन दान आदि औपचारिकता एवं श्रद्धा युक्त मान देना अति उत्तम है। सद्गुरू जी इष्ट भगवान तथा भक्त या साधक के बीच में साक्षी होते है।

हम क्या और क्यों कर रहे हैं या कर्म उद्देश्य या फलादेश आदि का ज्ञान नहीं होता अर्थात साधना या कर्म या भक्ति पूजन आदि केवल यन्त्र के सदृश्य होती है।

अर्थात गुरू बिना ज्ञान नहीं। दुनिया में अध्यात्मिक ज्ञान, योग, साधना मन्त्र भक्ति कर्मकांडों इत्यादि अनेकों, ग्रंथ पुराणों, वेद एवं पुस्तकें हैं। उसका पठन एवं अभ्यास जरूर करना चाहिये। फिर भी इनका मूल-वास्तविकता का सत्य का इ. का ज्ञान सतगुरू बिना नहीं होता और यही सत्य है। □

मन को एकाग्र कैसे करें?

एकाग्रता अर्थात केन्द्रिस्त मन करने के लिये प्राणायाम करना आवश्यक है और यह प्राणायाम हठ से करना होगा अर्थात हठयोग द्वारा ही होगा। अतः "ह" याने सूर्य और "ठ" याने चन्द्र कहा है। साधक के शरीर में ७२००० नाड़िया विद्यमान है जो अपने-अपने कार्यानुसार कार्य शील है। इनमें तीन प्रमुख नाड़ियां हैं -

१. इड़ा (सूर्यनाड़ि) २. पिंगला (चन्द्र नाड़ि) ३. सुषुम्ना नाड़ि कहते हैं। इसमें सुषुम्ना मुख्य है।

यह इड़ा पिंगला के बीच में, पीठ के रीड की हड्डी में सीधी स्थित नाड़ि है। इसके जड़ (मूलाधार चक्र) में सर्पाकृति मंण्डलाकार कुण्डलिनी महाशक्ति है। तथा इसका दूसरा छोर मस्तिक तक (सहस्त्रागार चक्र) स्थित विद्यमान है। हटयोग-प्राणायाम तथा मुद्राओं के अभ्यास द्वारा यह कुण्डलिनी, जागृत कर सकते हैं। जिसके फलस्वरूप साधक सिद्धियों का अधिकारी हो जाता है।

प्राणायाम : अतः प्राणायाम यह स्वास प्रस्वास (जपा अजपा) प्रक्रिया है। प्रथम आपको बाएं नासिका रन्ध्र को (चन्द्र स्वर भी कहते हैं) अंगूठे से बंद कर (दबा के) दाये नासिका रन्ध्र (सूर्य स्वर भी कहते हैं) से ३ सेकेण्ड तक वायु (प्राण भी कहते हैं) काया भीतर खींचना (पूरक) फिर दोनों नासिका रन्ध्रों को अंगूठा और मध्यमा से बन्द (दबा के) काया अन्दर निश्चेष्ठ और ध्यान को केन्द्रित करके वायु (प्राण) को अर्थात श्वांस को ९ सेकेण्ड तक रोक देना (कुम्भक) अतः दायें नासिका रन्ध्र को अंगूठे से दबाकर बायें नासिका रन्ध्र से वायु को ६ सेकेण्ड तक बाहर छोड़ना (रेचक) इसी प्रकार पूर्ण प्रक्रिया पूर्व

विधि से विपरीत ढंग से फिर करना है। यह हुआ एक प्राणायाम विधि। इस विधि से शरीर के भीतर की अशुद्ध वायु बाहर जाकर नसें नाड़ियां, हृदय , आते इ. शुद्ध होती है। साथ साथ चित्त में एकाग्रता आने लगती है। अर्थात जैसे जैसे अन्दर काय इन्द्रिये शुद्ध होती है वैसे वैसे एकाग्रता प्राप्त होती है। इस प्रकारे साधारण २१ प्राणायाम करने के उपरान्त चित्त का निरोध होकर मन निर्विचार होता है। ऐसे संकल्प-विकल्प विरहित मन एवं चित्त प्रत्याहार प्रक्रिया में प्रवाहित होती है और कोरे कागज या निर्मल जल जैसा साधक साफ अन्तःकरण का हो जाता है।

अतः इसी समय निम्न मंत्रों को धारण कर मन्त्र का मनन करें। चिन्तन करें।

सूचना : यहां अगर कोई भक्त साधना-आसन-प्राणायाम आदि को नहीं कर सकता तो वह उपरोक्त सद्गुरू कलश सहित नवनाथ सिद्धों का प्रत्येक सुपारी या रूद्राक्षों का पूजन के २१-२१ बार आर्वतन (पुनरावृत्ति) करे।

या

पूर्वोक्त संक्षिप्त वर्णित नवनाथ दर्शन चरित्रों को (पृष्ठ सं. २ से ४० तक) पाठ करें और चित्रों का अवलोकन करें।

विशेष : साधना करके मन को एकाग्र करना ही उचित है।

इसके पश्चात मन एकाग्र अर्थात निर्विचार होने पर निम्न नवनाथ मंत्र को धारण कर मंत्र का मनन या चिन्तन करें।

नवनाथ नाम स्वरूप जाप मन्त्र

सत नमो आदेश। गुरूजी को आदेश। ॐ गुरूजी। ॐकार आदिनाथ ॐकार स्वरूप बोलिये। उदयनाथ पार्वती धरती स्वरूप बोलिये। सत्यनाथ ब्रह्माजी, जल स्वरूप बोलिये। सन्तोषनाथ विष्णु जी खण्ड-खाण्ड तेज स्वरूप बोलिये। अचल अचम्भेनाथ आकाश (शेष) स्वरूप बोलिये। गजबेली गजकन्थड़नाथ गणेश जी, गज हस्ती स्वरूप बोलिये। ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथ अठारह भार वनस्पति स्वरूप बोलिये। माया स्वरूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ जी माया स्वरूप बोलिये। घटे पिण्डे नव निरंतर सम्पूर्ण रक्षा करन्ते, श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी बाल (शिव) स्वरूप बोलिये।

इति नवनाथ नाम जाप मन्त्र सम्पूर्ण भया, श्री नाथजी गुरू जी को आदेश। आदेश।

संक्षिप्त नवनाथ गायत्री

"ॐ श्री नवनाथाय विद्महे, ज्योर्तिमयाय धीमही तन्नो अलख निरंजन प्रचोदयात्।"

उपरोक्त नवनाथ नाम स्वरूप जाप मन्त्र का पाठ करें तथा संक्षिप्त नवनाथ गायत्री मंत्र का १०८ बार जाप करें यह जाप नित्य एक या सवा घण्टा भी कर सकते हैं। जाप रूद्राक्ष माला से करना उत्तम है।

आप निम्न अन्य साधन साधना विधि द्वारा भी अपने साध्य-इष्ट-अर्थात नाथ सिद्ध नवनाथों के दर्शन कर सकते हैं।

शाम्भवि मुद्रा :- योग साधना के दस मुद्राये हैं। जिसमें यह शाम्भवि मुद्रा अत्यंत प्रभावी शीघ्र फलदायी तथा सहज प्रयोग में होने वाली है। साधक अपनी दोनों आंखे बन्द करके नासिका के अग्रभाग नोक पर दोनों दृष्टि को टिकाते हुए

एकाग्र एवं स्थिर करें अतः यह एकाग्र दृष्टि को धीरे धीरे ऊपर की ओर खींचते खींचते भ्रूमध्य स्थान पर लाकर स्थिर करो। भ्रूमध्य अर्थात दोनों आंखों के भौवें के मध्य में एकाग्र दृष्टि को स्थिर करना इसे शाम्भवि मुद्रा कहते हैं। जिसमें मन चित्त भी शीघ्र एकाग्र होता है। ऐसे मुद्रा में स्थित एकाग्रता में स्थिर होते हुए निम्न मंत्र का जाप या मनन करें।

"नवनाथ गायत्री मंत्र"

"ॐ श्री नवनाथाय विद्महे ज्योर्तिमयाय, धीमही तन्नो अलख निरन्जन प्रचोदयात्।"

या

गोरक्षनाथ जी का शाबर मंत्र -

"ॐ शिव गोरक्ष योगी"

उपरोक्त मन्त्र प्रतिदिन नित्य विधि से कम से कम एक-सवा घण्टा करें ४ से ६ मास में आपको नवनाथ जी के या गुरू गोरक्षनाथ जी के दर्शन अवश्य होंगे।

अनुभूति - प्रथम छोटे छोटे अनेक प्रकार की बिन्दियां दिखेंगी। आगे प्रगती पथ पर धुन्धलासा प्रकाश फिर तेजस्वी प्रकाश स्त्रोत। साधारण ३-४ मास उपरान्त ज्योति के दर्शन होंगे। जिस समय आपके अन्तःकरण के भाव (भक्ति से) नवनाथों के या गुरू गोरक्षनाथ जी के दर्शन करना चाहेंगे तब प्रथम सद्गुरू जी के दर्शन होंगे फिर आवाज या ध्वनी सुनाई देगी अन्त में अपने इष्ट गुरू गोरक्षनाथ जी या नवनाथों के दर्शन अवश्य होंगे। □

ज्योति स्वरूपी नवनाथ सिद्ध या गुरू गोरक्षनाथ जी के दर्शन

इस विधि में साधक पूर्व वर्णित नवनाथ मंत्र साधना करते समय जिस चौकी या पाटला ऊपर नवनाथों की सुपारी या रूद्राक्ष रखकर स्थापना की है उसी जगह नऊ गौ घृत के दीपक प्रत्येक सुपारी या रूद्राक्ष के पास रखकर निम्न ज्योत मंत्र द्वारा प्रत्येक दीपक प्रज्वलित करें।

ज्योत मंत्र

सत नमो आदेश। गुरूजी को आदेश। ॐ गुरू जी। आटी घाटी बल कपाटी अलष पुरूष बैठे निज पाटी। लागी कुंजी खुलिया ताला, पिण्ड ब्रह्माण्ड भया उजियाला। आवो चंदा बठो पास हमको कहो धर्म की बात। सूरज बाला करे विचार धर्ती तपे अपरम्पार उत्तर दिशा में धुंधुकार जोत जगाये किया जय जय कार बल बल जाऊ लागु पाऊ जोत भवन मे शीश नमाऊ। ज्योत जागे सिर थान में सूरज कोटी समान। जो सुख गहरा चाहिये तो धरो जोती का ध्यान जागी जोत भागी छोत। जहां जोत तहां उजियाला तहां बैठे नवनाथ संग गुरू गोरख बाला। गुरू गोरक्षनाथ जी को हाथ जोड़कर आदेश! आदेश!! नमो नमः श्री नवनाथ सिद्धों को हाथ जोड़कर आदेश। आदेश। नमो नमः श्री नाथ गुरूजी को आदेश।

इस मंत्र द्वारा सभी दीप चेतन होने के पश्चात सभी दीपक को श्रद्धा युक्त भक्ति से नमस्कार करके प्रत्येक ज्योति का दर्शन करें और उपरोक्त नवनाथ गायत्री मंत्र का या ॐ शिव गोरक्ष योगी मंत्र का जाप करें जब तक सभी दीपक के

गौ घृत खत्म होकर दीपक बुझते नहीं तब तक जाप करना चाहिये। दीपक छोटे बड़े अपने हिसाब से समय उपलब्धी अनुसार ले सकते हैं। कम से कम एक या सवा घण्टा एकाग्र जप होना आवश्यक है। ऐसा नित्य प्रतिदिन वही समय वही स्थान वही दीपक और यही मन्त्र करने के उपरान्त इकतालीस (४१) दिन में श्री नवनाथ सिद्धों का या गुरू गोरक्षनाथ जी का स्वरूप दर्शन अवश्य होगा। एकान्त होना आवश्यक है। यहां भी साधना करते करते प्रथम बिन्द-बिन्दिया दर्शन फिर प्रकाश फिर प्रकाश पुंज या जोत फिर ज्योति का दर्शन होना। तदनंतर (आवाज) ध्वनी सुनाई देगी फिर अन्त में श्री नाथ जी का दर्शन लाभ होगा। सद्गुरू कृपा एवं गुरू गोरक्षनाथ जी आपकी साधना सफल करें।

अन्त में इष्ट को भोग लगावें, मूंगदाल की खिच्चड़, मूंगदाल वड़े, दही, मिठाई, (नऊ प्रकार की मिस्त्र) मिठाई, पंचमेवा या पंचफल

या

गौ का दूध और रोट प्रसाद (कच्चा या पक्का रोट)

या

घर, मकान, मठ में जो भी भोजन (प्रसाद) बनेगा उसका भोग लगावें और बाद में सभी को प्रसाद रूप में बाट देवें।

हवन

विधि के अंतिम दिन हवन अवश्य करें हवन गौ घृत तथा हवन सामग्री से करें। मंत्र नवनाथ गायत्री तथा ॐ शिव गोरक्ष योगी का १०८ बार या १००८ बार मंत्र उच्चारण करके तथा मंत्र के अन्त में नम् स्वाहाः कहकर हवन करें।

अतः नाथ योगी (सन्त) हो तो नादि आदेश करके और अन्य हाथ जोड़कर नमस्कार करके नाथ प्रार्थना करें।

प्रार्थना

यह मेरा संसार तथा मेरे सब, कार्य, कर्म, साधना, भक्ति तथा लाभ हानि आज से गुरू गोरक्षनाथ एवं नवनाथ सिद्धों को सुपुर्त स्वाधीन किया है जो कि आज से उनका मेरे इस घर में स्थान मठ मकान में (वास्तव्य) निवास हो रहा है। उनके सहवास में शान्ति आनंद एवं सर्व मंगलमय हो।

तीर्थ स्थान महात्म्य

१. यह पूजा-पाठ मंत्र, विधि, सिद्ध, स्थल, मृगस्थली (काठमाण्डु, नेपाल) में केवल ७ दिन में क्षेत्र त्र्यंबकेश्वर अनुपान शिला (नासिक महाराष्ट्र) में केवल ११ से २१ दिन में तथा गंगासागर (कलकत्ता) में ४१ दिन में किया तो श्री शम्भुजती गुरू गोरक्षनाथ जी का दर्शन अवश्य होगा।

२. बद्रिनाथ तपोवन में, त्र्यंबकेश्वर (नासिक महाराष्ट्र) में द्वारिका के पास द्वारका बेट में तथा कामख्या पीठ में उपरोक्त साधना करने पर शीघ्र ही नवनाथ सिद्धों के दर्शन होंगे।

३. अन्य स्थान -जो एकान्त-शान्त-पवित्र संस्कारित या तपस्या साधना सिद्ध स्थान होना चाहिए, जैसे एकान्त उद्यान, तपोवन, पवित्र नदियों का संगम, सरिता तट, सागर तट, त्रिभुज बेट, पुण्य क्षेत्र, सप्त पुरियों, चारों धाम स्थान, पर्वत गिरि कन्दरा गुफा पर्वत की तराई गोशाला मन्दिर जल में पीपल, वट वृक्ष, आवला, त्रिवेनी, वृक्षों के नीचे, विशेषतः नाथ सिद्धों की तपस्थली हो और भी अपने गृह जहां एकांत, पवित्र, शान्त स्थान हो। □

विशेष विधि

यह नवनाथ चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि का नौ दिन का अनुष्ठान करना चाहिये। नित्यकर्म अनुसार प्रत्येक दिन पाठ तथा जप के उपरान्त निम्न विधि शुभकर्म, नियम से करने चाहियें जिससे दुष्कर्म एवं पापों का नाश होकर पुण्य संचय होगा उत्तरोत्तर नवनाथ भक्ति योग का आनन्द समाधान एवं कार्य यश पूर्ति होकर शाश्वत शान्ति को प्राप्त कर सकते हैं।

१. रविवार : यह पाठ का प्रथम दिन प्रारम्भ करें प्रातः स्नान उपरान्त सूर्योदय के समय सूर्य की ओर मुख करके दोनों हाथों की अंजलि में पीपल या वटवृक्ष का पत्ता लेकर जल से अर्घ्य देना चाहिये। तदनंतर नऊ बार नऊ नाथों के नाम से अर्घ्य देना चाहिये नवनाथ मंत्र जाप करके और शुभ प्रार्थना करें और पाठ एवं मंत्र जाप करें और शाम को सूर्यास्त के समय पीपल या वटवृक्ष के जड़ में गौ घी का दीपक चेतन करके रखें, वृक्ष को जल चढ़ाकर नमस्कार करें।

२. सोमवार : यह दूसरे दिन पाठ मंत्रजाप के उपरान्त किसी भी साधु सन्त (विशेषतः नाथ दर्शनी योगी) को यथा भोजन तथा दान (पैसे-वस्त्र-धातु इत्यादि) देना चाहिये या शुभ सेवा करें।

३. मंगलवार : यह तीसरे दिन पाठ मंत्रजाप के उपरान्त सात या नऊ कन्याओं को (जिनकी उम्र पाँच से दस वर्ष की हो) भोजन तथा दान (पैसे-वस्त्र-धातु आदि) देना चाहिये। कम से कम एक कन्या को दे सकते हैं।

४. बुधवार : यह चौथे दिन पाठ मंत्रजाप के उपरान्त गौ को (विशेषतः काली कपिला गाय को) उसके पैरो पर जल

डालें मस्तक पर सिन्दूर या चन्दन तिलक लगावें और केली के पत्ते में घी बुरा (शक्कर) और आटा मिलाकर उसके लड्डू खिलाकर और परिक्रमा एवं नमस्कार करें।

५. गुरूवार : यह पांचवे दिन पाठ मंत्र जाप उपरान्त अपने सद्गुरू जी की पूजा सेवा भोजन दान करना चाहिये। अगर सद्गुरू नहीं बनाये होंगे तो नजदीक किसी श्री नाथ मन्दिर या शिव मन्दिर में भोग लगा देना चाहिये।

६. शुक्रवार : यह छठे दिन पाठ मंत्र जाप उपरान्त सात या नऊ सुहागन (सुहासिनी) की गोद भरे (गोद - गीला नारियल, कुंकुम, पांच हरी या लाल चूड़ियां, मीठा, कंघी, तेल, वस्त्र इत्यादि) यह गोद शाम को सूर्यास्त समय को भरें। भोजन दिया तो और भी उत्तम कम से कम एक सुहागन की गोद भरना चाहिये।

७. शनिवार : यह सातवें दिन पाठ मंत्र जाप के उपरान्त काले कुत्ते को घी लगाई हुई रोटी खिलावें और शाम को सूर्यास्त के समय सरसों के तेल का दीपक चेतन करके किसी भी रस्ते पर या चौराहे पर रख देवें।

८. रविवार : यह आठवें दिन पाठ मंत्र जाप विधि के उपरान्त नऊ मुट्ठी आटा नऊ मुट्ठी (पानी में भीगी हुई) मूंगदाल थोड़ा मीठा एवं घी मिलाकर छोटी-छोटी गोलियां बनायें और जल में मछलियों को एक-एक करके खिलावें या नऊ मुट्ठी कोई भी धान्य (अनाज) पंछियों को (काक, चिड़िया या कबूतर आदि को) खिलावें।

९. सोमवार : यह नवां अन्तिम दिन पाठ मंत्र जाप उपरान्त नवनाथों के नाम से यज्ञविधि (पूर्व वर्णित) करके गौ घी और हवन सामग्री से हवन करें।

इस प्रकार आप उपरोक्त प्रत्येक वार की विधि करते हुए तथा पाठ-मंत्रजाप करते हुए ४१ दिन (अर्थात सवा माह)

सवा वर्ष या बारह वर्ष या अखण्ड यह नवनाथ दर्शन विधि श्रद्धा भक्ति से कर सकते हैं, निःसन्देह आपको लाभ होगा।

विशेष :- यह विधि शुक्ल पक्ष के एकादशी से नवमी तक श्रावण, कार्तिक, चैत्र, अश्विन महीनों या चर्तुमास में करना चाहिये एकादशी को जो भी वार आये वही विधि से प्रारम्भ करें।

विशेष सूचना : नाथ सम्प्रदाय के विशेष शाबर तंत्र-मंत्र साधना में विधि विधान में और उत्तरोत्तर प्रगति करना चाहो तो श्री नाथ रहस्य ग्रंथ का अभ्यास करें।

-: कुछ नियम :-

१ सतगुरू प्राप्ति आवश्यक है।

२ ग्रंथ पाठ मंत्र जाप एकान्त में तथा श्रद्धा भक्ति से करें।

३ भोजन भजन शयन आदि कर्म भूमि पर करें। अपने ग्राम की सीमा में रहे गाँव की सीमा पार ना करे।

४ अनुष्ठान के अनुसार व्रत करें।

५ अनुष्ठान विधि में साधु, सन्त, नाथ जी तथा सतगुरू जी नहीं मिले तो भोग एवं दान नजदीक के गोरक्षनाथ मन्दिर-धूना पर अर्पण करे।

६ हजामत-सांसारिक भोग - व्यसन निषिद्ध है।

७ अन्तिम दिन भण्डारा, जागरण आदि उत्सव कर सकते हैं।

८ यह विधि सभी नाथ, साधु, सन्त, ग्रहस्थ नर नारी बड़ी भक्ति एवं श्रद्धा से कर सकते हैं। □

गोरक्ष गायत्री मंत्र

सत नमो आदेश! गुरूजी को आदेश! ॐ गुरूजी! अलख निरन्जन कौन स्वरूपी बोलिये। अलख निरन्जन ज्योति स्वरूपी बोलिये। ओमकारे शिवरूपी, संख्या ने साधरूपी, मध्याने हंस रूपी, हंस परमहंस दो अक्षर, गुरू तो गोरक्ष, काया तो गायत्री ॐ ब्रह्मा, सोहं शक्ति, शून्य माता, अविगत पिता, अभय पंथ, अचल पदवी, निरन्जन गोत्र, विहंगम जाति, असंख्य प्रवर, अनन्त शाखा, सूक्ष्मवेद, आत्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी-श्री ॐ गों गोरक्षनाथाय विद्महे-शून्य पुत्राय धीमही, तन्नो-गोरक्ष निरन्जनः प्रचोदयात्। इतना गोरक्ष गायत्री जाप सम्पूर्ण भया। श्री नाथ जी गुरू जी को

सूचना :- उपरोक्त मन्त्र का नित्य प्रातः-मध्य-संध्या को त्रिकाल पाठ कर सकते हैं।

दक्षिणे बिरबंकस्य वामे च नाथ भैरवाः।
पुरूतो आदिनाथस्य तं वन्दे गुरू गोरक्षम्।।

आदेश आदेश मेरे सद्गुरू नाथा, मेरे सिद्ध नवनाथा।
नवही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।टेक।।

देखो सिद्ध आये कैसे नाथ दरबारा..... कैसे नाथ दरबारा।
बीच सिद्धों के चेते सिद्धों का धूना।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।१।।

जती गोरक्षनाथ आये नाथ दरबारा..... आये नाथ दरबारा।
बैठे उच्चासना जैसे ज्योति के स्वरूपा
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।२।।

ॐकार आदिनाथ आये नाथ दरबारा...आये नाथ दरबारा।
डम-डम डमरू बाजे सूत्र चौदह विद्या।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।३।।
आदिमाया शक्ति आयी उदयनाथा..... आयी उदयनाथा।
धर्ती के अवतार, दया क्षमा के रूपा।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।४।।

सत्यनाथ ब्रह्मा आये नाथ दरबारा..... आये नाथ दरबारा।
चारों वेद शास्त्र पढ़े ब्रह्माण्ड ज्ञाना।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।५।।

विष्णु अवतार आये सन्तोषनाथा..... आये सन्तोषनाथा।
सन्तों के सन्तोषा हरि उद्धारी जगा।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।६।।

नाथ दरबार आये अचल अचम्भेनाथा..आये अचम्भेनाथा।
शेष शाहि अवतार भार सृष्टि को तारा।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।७।।

देखो सिद्धों आये गणेशनाथा..... आये गणेश नाथा।
संग ऋद्धि सिद्धि गज कन्थड़नाथा।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।८।।

सिद्ध चौरंगीनाथ आये नाथ दरबारा.....आये नाथ दरबारा।
अजर, अमर भयी पूर्णांग काया।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।९।।

माया संग आये मत्स्येन्द्रनाथा..... आये मत्स्येन्द्रनाथा।
शिव शक्ति के पूता भया ॐकार नादा।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।१०।।

अनन्त कोटी बैठे चौरासी सिद्धा..... बैठे चौरासी सिद्धा।
धन्य धन्य सन्ता, किया जय जय ॐकारा।।

आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।११।।

निराकार नाथ भये साकार रूपा..... भये साकार रूपा।
अन्दर ज्योति ज्वाला पंच तत्व की काया।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।१२।।

अस्थि मास मज्जा सिद्ध काया निर्माना...सिद्ध काय निर्माना।
भया शून्य मन देखा अन्तर आत्मा।।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।१३।।

देखा नाथ दरबार गुरू आनन्द कृपा..... गुरू आनन्द कृपा।
नाथ विलास कहे छन्द भजनी लाग्या।
आदेश आदेश मेरे सद्गुरूनाथा मेरे सिद्ध नवनाथा।
नव ही नाथों की ज्योति प्रगटी हि जगा ।।१४।।

श्री नाथ जी गुरू जी को आदेश!

"जय श्री योगी गोरक्षनाथ" (भजन)

- सुरेन्द्र "शिवनन्दन"

जय-जय नाथ, जय श्री नाथ, जय श्री योगी गोरक्षनाथ।
तारनहार-पालनहार, जय-जय योगी गोरक्षनाथ।।

जिनके प्रबल, दिव्य तेज से आलोकित जग सारा,
सभी शक्तियाँ नतमस्तक हैं, काल भी जिनसे हारा।
ऋद्धि-सिद्धि चंवर ढुलाऐं, दस महाविद्या गायें,
चौंसठ योगिनी चरण पखारें, भैरों मृदंग बजाऐं।
बावन वीर करें वंदना, अपने दोनों जोड़े हाथ,
जय-जय नाथ, जय श्री नाथ, जय श्री योगी गोरक्षनाथ।।

सिद्ध है झोली, सेली, सिंगी, अनन्त कलाधारी,
भगवा बाना, कानन कुण्डल, शंकर के अवतारी।
जिनकी भक्ति को सब तरसें, साधू-सन्त-संसारी,
भक्तजनों पर दयावान वे, दुष्टों पर हैं भारी।
पार्वती जब न पहचानी, तब समझाऐं भोलेनाथ,
जय-जय नाथ, जय श्री नाथ, जय श्री योगी गोरक्षनाथ।।

तंत्र-मंत्र और योग, धरा पर जिनकी कृपा से फलता,
जिनकी भृकुटि देख, दुःख भी अपनी दिशा बदलता।
अपने भक्तों को करते, मन वांछित फल प्रदान,
जैसी जिसकी भक्ति, वो वैसा करता रसपान।
प्रभु शरण निज राखियो, करे नमन "शिवनन्दन" नाथ,
जय-जय नाथ, जय श्री नाथ, जय श्री योगी गोरक्षनाथ।।

(परम श्रद्धेय "श्री योगी विलासनाथ जी" की सद्प्रेरणा से प्रेरित)

आरती - "श्री नवनाथ दर्शन"

जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता ।।टेक।।

ॐकार आदिनाथ ॐकार स्वरूपा.....ॐकार स्वरूपा ऽऽऽ
आदि अनादि सद्गुरू कहते हो सन्ता.....कहते हो सन्ता ऽऽऽ
नाथ लिये अवतार, नवनाथ सिद्धा.....नवनाथ सिद्धांऽऽऽ
भक्ति से प्रसन्न, शक्ति से प्रसन्न जगजन उद्धाराऽऽऽ
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता ।।१।।

उदयनाथ पार्वती धर्ती माँ स्वरूपा..... धर्ती माँ स्वरूपा
शक्ति माया संग अनंत रूपा..... अनंत रूपाऽऽऽ
भया ज्ञानोदय जग उद्धारा..... जग उद्धाराऽऽऽ
दया ही करोगी क्षमा ही करोगी असुरी दल मारा.....
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता ।।२।।

सत्यनाथ ब्रह्मा जी जल रूप स्वरूपा..... जल रूप स्वरूपाऽऽऽ
ब्रह्मलोक बैठे, बहे ज्ञान की गंगा..... बहे ज्ञान की गंगा ऽऽऽ
चारों वेद शास्त्र गायत्री महिमा..... गायत्री महिमा ऽऽऽ
कमलासन बैठले, सृष्टि को उपाले सुरमुनि वन्दना
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता ।।३।।

विष्णु जी अवतार सन्तोष नाथा..... सन्तोषनाथा ऽऽऽ
वैकुण्ठ वैभव राज योग की माया.....राज योग की मायाऽऽऽ
रामकृष्ण अवतार नाथ योग ही पाया.....नाथ योग ही पाया ऽऽऽ
शस्त्र को उठाये, दुष्ट को मुष्ठाये निज भक्त रक्षाया
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता ।।४।।

अचल अचम्भे शेष वायु ही स्वरूपा..... शेष वायु ही स्वरूपाऽऽऽ
शीश सृष्टि का भार शक्ति अनन्ता .....भार शक्ति अनन्ता ऽऽऽ
कण्ठी हारमुक्ता रमे शम्भु के संगा .....रमे शम्भु के संगा ऽऽऽ
पाताल बैठले गगन उड़ाले कुंडलिनी योगा ....
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भव चिन्ता ।।५।।

देखो सिद्धों अवतार गणेशनाथा..... गणेश नाथा ऽऽऽ
गजबेली हस्ती गज कन्थड़नाथा ..... कन्थड़नाथा ऽऽऽ

सुमंगल मांगल्य संकटी नाशा..... संकटी नाशा ऽऽऽ
ऋद्धि ही पायेगे, सिद्धि भी पायेगे मूलचक्र के वासा
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भाव चिन्ता।।६।।

ज्ञान पारखी सिद्ध चौरंगीनाथा..... सिद्ध चौरंगीनाथा ऽऽऽ
चन्द्र अवतार सोलह सिंगार रूपा..... सोलह सिंगार रूपा ऽऽऽ
भया पूर्णांग नाथ मत्स्येन्द्र कृपा..... नाथ मत्स्येन्द्र कृपा ऽऽऽ
अजर रहेंगे अमर रहेंगे धन्य धन्य हो सन्ता
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भाव चिन्ता।।७।।

मत्स्य माया स्वरूपी मत्स्येन्द्रनाथा.... मत्स्येन्द्रनाथा ऽऽऽ
महाज्ञान मत्स्य गर्भ में ही पाया..... मत्स्य गर्भ में ही पाया ऽऽऽ
योगमाया का खेल न्यारा ही न्यारा.....खेल न्यारा ही न्यारा ऽऽऽ
ब्रह्म को पायेगे माया से खेलेंगे जन मन रंजना
जय देव, जय देव, जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भाव चिन्ता ।।८।।

गोरक्ष गोरक्ष शिव ज्योति के स्वरूपा...शिव ज्योति स्वरूपा ऽऽऽ
महायोगी महाज्ञानी तुम मत्स्येन्द्र पुता .....तुम मत्स्येन्द्र पुता ऽऽऽ
अनन्त अमर तुम घट घट में वासा .....तुम घट घट में वासा ऽऽऽ
मुक्ति को पायेंगे मोक्ष को पायेंगे सुरनर मुनि वन्दना
जय देव जय देव जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भाव चिन्ता ।।९।।

ऐसे नवनाथ प्रगटे युगो ही युगा .....प्रगटे युगो ही युगा ऽऽऽ
योगी चमत्कारे सारी सृष्टि को तारा .....सारी सृष्टि को तारा ऽऽऽ
नाथ विलास गाये सदगुरू जी कृपा .....सदगुरू जी कृपा ऽऽऽ
भक्ति में रमाये भक्ति में नमाये नवनाथ के स्वरूपा.....
जय देव जय देव जय नवनाथा हो श्री नवनाथा
आरती करता हर ली भाव चिन्ता ।।१०।।

ग्रंथ महात्मय

यह नवनाथ चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि विधान ग्रंथ का पठन पाठन करने हेतु पाठक गणों से अनुरोध है कि इस ग्रंथ में हमारे नाथ सम्प्रदाय के योग मार्ग के अनुरूप मंत्र, तन्त्र, कर्म काण्डों एवं चरित्र साक्षात्कार इत्यादि भक्ति विधियों का आधार, मूल रूप से लिया गया है। यह विधि विधान, पठन-पाठन बताये हुए मार्ग दर्शन अनुसार करने पर आपको सभी प्रकार की उपलब्धियां प्राप्त हो सकती है। साधक द्वारा अपने तन-मन-धन से श्रद्धा युक्त विधि विधान-पूजन एवं अभ्यास करने पर, नाथ सिद्धों का सत-चितानन्द साक्षात्कार होगा।

इस मार्गदर्शन के अनुसार सगुण उपासक, सगुण दृष्टि से और निर्गुण उपासक, निर्गुण दृष्टि से प्राप्ति होगी। अर्थात् सगुण उपासक को इस लोक में धन सम्पदा, ऐश्वर्य, सुख सम्पन्नता की प्राप्ति होगी एवं परलोक में भी स्वर्ग-सुख प्राप्त होगा तथा निर्गुणी उपासक के लिये मोक्ष मुक्ति प्रद होगा और भक्त के जीव-आत्मा का समीकरण होकर ब्रह्म भाव की प्राप्ति होगी। पाप-पुण्य से परे एवं मोह माया रहित होकर साधक को ब्रह्मानन्द को प्राप्ति होगी तथा शरीर त्याग की सरलता, अत्यांतिक दुःख की निवृत्ति होकर परमानन्द की प्राप्ति होगी। इस प्रकार से इस ग्रंथ के यह मुख्य उद्देश्य हैं। अर्थात जीव भाव समाप्त होकर आत्मभाव की स्थापना होगी।

-योगी विलासनाथ

मूल्य सूची-पत्र

नाथ सम्प्रदाय प्रकाशन

(मूल रचयिता गुरु गोरक्षनाथ जी, मत्स्येन्द्रनाथ जी, भर्तृहरि जी इत्यादि नाथ सिद्ध)

	पुस्तक सूचि (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
1.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (सम्पूर्ण शाबर मन्त्र तन्त्र नित्यकर्म इत्यादि विधि विधान का विवरण ग्रंथ (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	200/-
2.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-4) श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल (योगमाया पूजन पद्धति का विस्तृत विवरण) (हिन्दी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	250/-
3.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (अंग्रेजी अनुवाद)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	400/-
4.	श्री नवनाथ (हिन्दी) (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि तथा अपेक्षित कार्य पूर्ति-विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	65/-
5.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (हिन्दी) (अपेक्षित कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा कवच के लिये पाठ हवन के विधान)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
6.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	125/-
7.	श्री नाथ सिद्ध पाठ (नाथ सिद्ध पाठ, गोरक्षनाथ तंत्र-मंत्र शबदी आरती, भजन इ. विधि विधान सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	35/-
8.	श्री प्राचीन भर्तृहरी गुफा महात्म्य (देश-विदेश के नाथ सिद्धों के तीर्थ स्थलों के पते/ विवरण)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	50/-
9.	श्री गोरक्ष नाथ सिद्ध चालीसा (सरल हिन्दी अनुवाद स्तुति एवं आरती विधि सहित)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	6/-
10.	श्री गोरक्ष तंत्रम् (सरल हिन्दी अनुवाद तंत्र-मंत्र विधि)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	70/-

	पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
11.	श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि (उपासना-साधना)	योगी विलासनाथ जी पुजारी	50/-
12.	श्री नाथ सम्प्रदाय आरती-भजन संग्रह	योगी विलासनाथ जी पुजारी	45/-
13.	श्री नाथ सिद्धों के मंत्र-तत्र टोटके	महावीर सैनी (गुरु योगी विलासनाथ जी पुजारी)	150/-
14.	योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय	योगी भंभूलनाथ जी	30/-
15.	गोरक्ष स्तवांन्जलि	योगी भंभूलनाथ जी	12/-
16.	श्री गोरक्ष सहस्त्र नाम स्तोत्र	योगी भंभूलनाथ जी	36/-
17.	शब्दावली व भजन	योगी भंभूलनाथ जी	10/-
18.	गुरु गोरक्षनाथ शब्दावली (भजन)	महन्त सेवानाथ जी	15/-
19.	अनुभव भजन माला	भोलानाथ जी योगी	10/-
20.	भर्तृहरि निर्वेदनाटकम्	महाकवि हरिहर रचित	5/-
21.	श्री नाथ चरित्र	योगी वीरनाथ जी	70/-
22.	सिद्ध प्रयोग चिकित्सा	योगी वीरनाथ जी	8/-
23.	श्री बाबा मस्तनाथ चरित्र	योगी शंकरनाथ जी	20/-
24.	अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास	योगी शंकरनाथ जी	100/-
25.	श्री बाबा मस्तनाथ कथा	रामेश्वरनाथ जी	15/-
26.	चन्द्रावतार सिद्ध चौरंगीनाथ (पूरण भगत)	शिवानी शर्मा	35/-
27.	दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरुदेव	शिवानी शर्मा	100/-
28.	श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ चालीसा	शिवानी शर्मा	10/-
29.	श्री बाबा मस्तनाथ सहस्त्र नाम	शिवानी शर्मा	20/-
30.	श्री मस्तनाथ चरितम् (बड़ी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	100/-
31.	श्री मस्तनाथ चरितम् (छोटी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	30/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित) लेखक/संचालक, मूल्य

32. गोरखबाणी-रामलाल श्रीवास्तव 50/-, 33. गोरख चरित्र-रामलाल श्रीवास्तव 30/-, 34. गोरख दर्शन (हिन्दी फिलॉसफी) अक्षय कुमार बेनर्जी 90/-, 35. गोरख दर्शन-विजय पाल 50/-, 36.श्री नाथ सिद्ध चरितामृत रामलाल श्रीवास्तव 30/-, 37. गोरक्षनाथ एवं उनकी परंपरा का साहित्य-डा. दिवाकर पाण्डेय 40/-, 38. आदर्श योगी-अक्षय कुमार बेनर्जी 25/-, 39. योगासन-रामलाल श्रीवास्तव 30/-, 40. सिद्ध सिद्धान्त पद्धत-रामलाल श्रीवास्तव 35/-, 41.गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह-रामलाल श्रीवास्तव 40/-, 42. हटयोग प्रदीपिका-रामलाल श्रीवास्तव 35/-, 43. योग बीज रामलाल श्रीवास्तव 15/-, 44. नाथ योग-अक्षय कुमार बेनर्जी 15/-, 45. अमनस्क योग-अक्षय कुमार बेनर्जी 20/-, 46.गोरक्ष पद्धति-रामलाल श्रीवास्तव 20/-, 47. गोरक्ष शतक-रामलाल श्रीवास्तव 20/-, 48. वैराग्य शतक-रामलाल श्रीवास्तव

20/- 49. गौरक्ष वैदिक पूजा पद्धत-वेदाचार्य रामानुज त्रिपाठी20/-, 50. विचार दर्शन -योगी आदित्यनाथ 20/-, (युग पुरुष महन्त दिग्विजय नाथ...ने कहा), 51. प्रताप असी बावणी (कविता संग्रह)-मनोहर द्विवेदी 15/-, 52. योगवाणी अंक (गोरखबाणी) गोरखनाथ मन्दिर 25/-, 53. योगवाणी (गोरक्ष चरित्र दर्शन) गोरखनाथ मन्दिर 15/-, 54. योगवाणी (नाथ सिद्ध चरित्रांक)-गोरखनाथ मन्दिर 40/-, 55. योगवाणी (शिव संहिता)-गोरखनाथ मन्दिर 25/-, 56. योगवाणी (सिद्ध दर्शन)-गोरखनाथ मन्दिर 15/-, 57. योगवाणी (नाथ तीर्थ स्थल)-गोरखनाथ मन्दिर 25/-, 58. योगवाणी (नाथ सिद्ध बानी) गोरखनाथ मन्दिर 25/-, 59. योगवाणी (गोरक्ष सिद्धान्त) गोरखनाथ मन्दिर 25/-, 60. योगवाणी (गोरक्ष ग्रन्थावली) गोरखनाथ मन्दिर 25/-, 61. योगवाणी (मत्स्येन्द्रनाथ अंक) गोरखनाथ मन्दिर 25/-, 62. योगवाणी (सर्व धर्म समभाव) गोरखनाथ मन्दिर 25/-, 63. योगवाणी (राष्ट्रीय एकता) गोरखनाथ मन्दिर 25/-, 64. योगवाणी (विशेषांक 1994) गोरखनाथ मन्दिर 15/-

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र
(विधि विधान द्वारा सिद्ध किये हुये)

साईज	ताम्बा (मूल्य)	तांबा (सिल्वर पॉलिश) मूल्य
3× 3 इंच	50/-	60/-
5×5 इंच	70/-	80/-
7×7 इंच	90/-	110/-
9×9 इंच	300/-	325/-
12×12 इंच	425/-	450/-

कैमरा फोटोग्राफ

गुरु गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ, बाबा सुन्दरनाथ, बाबा बालकनाथ, रतननाथ, नवनाथ, भैरव,ज्वालाजी, मृत्युंजय आदि सभी नाथ सम्प्रदाय-प्रासंगिक (चरित्रनुरुप) कैमरा फोटो।

साईज	कैमरा फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
छोटे फोटो P/C=5" X 3.5"	5/-	-
बड़े फोटो B/C=7" X 5"	10/-	35/-
नवनाथ स्वरुप B/C=7" X 5"	10/-	35/-
आगे आगे गोरख जागे BB/C=10" X 5"	25/-	
बड़ा फोटो B,B,B/C=10" X 8"	35/-	-

MP3 DVD-VCD (सी०डी०)

		DVD	VCD
अमृतांजलि (भाग-1) गोरक्ष चालीसा,भजन इत्यादि	गायक-सोमनाथ शर्मा	35/-	50/-
अमृतांजलि (भाग-2) चौरासी सिद्ध चालीसा,भजन इ०	भजन रचना-योगी विलासनाथ	35/-	50/-
श्री नाथ सिद्ध पाठ भजन (भाग-1+2)	रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री गोरक्ष वन्दना, भजन	रचना-योगी विलासनाथ	35/-	50/-
श्रीनाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)कम्प्यूटर फ्लॉपी	रचना-योगी विलासनाथ	45/-	

कैलेण्डर फोटो

विवरण	साईज	कैलेण्डर फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	20" X 14"	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (ब्रह्माण्ड)	22.5" X 17.5"	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	14" X 9"	15/-	80/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	10" X 7"	10/-	40/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	7" X 5"	5/-	25/-
आगे-आगे गोरख जागे	16.5" X 39.5"	30/-	225/-
बाबा मस्तनाथ जी	7" X 5"	3/-	25/-
बाबा मस्तनाथ जी	30" X 17"	10/-	-
श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन	22.5" X 17.5"	25/-	225/-
पोस्टकार्ड साईज फोटो	5" X 3.5"	3/-	-

यन्त्र विवरण आर्ट पेपर पर प्रिन्टेड लेमिनेटेड फोटो फ्रेम

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र	10/-	70/-
धरत्री गायत्री यन्त्र	10/-	70/-
उपरोक्त चारो यन्त्रों का सैट	40/-	300/-

6 January 2010 21:57:42

6 January 2010 21:57:43

कैसेट

गुरु गोरक्षनाथ चालीसा (भाग 1)	गायक - सोमनाथ शर्मा	30/-
चौरासी सिद्ध चालीसा (भाग 2)	गायक -सोमनाथ शर्मा	30/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
बाबा मस्तनाथ चमत्कार एवं महिमा भजन (1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 भाग)		प्रत्येक 25/-
अन्य नाथ सम्प्रदाय की भजन कैसेटें		35/-

लॉकेट, चाबी-छल्ले, कुण्डल इत्यादि

विवरण	मूल्य
लॉकेट (गुरु गोरक्षनाथ जी एवं बाबा मस्तनाथ जी के)	5/-, 10/-,15/-, 20/-, 15/-, 25/-, 30/-
गुरु गोरक्षनाथजी एवं बाबा मस्तनाथजी के फोटो युक्त चाबी छल्ले एवं लॉके	5/-, 8/-, 10/-, 15/-, 20/-, 30/-
(नादि पवित्री, चन्दन लकड़ी, शीशे, पीतल, तांबे, प्लास्टिक इत्यादि)	25/-, 10/-, 40/-, 40/-, 20/-, 60/-
कुण्डल शीशा तथा रंगीन प्लास्टिक में छोटे-बड़े	25/-, 30/-, 40/-
कुण्डल तारा मण्डल, चाइनीज बिलौरी पत्थर के आदि	1500/-, 1800/-
धातुओं में तथा रुद्राक्ष माला, कड़े इत्यादि	200/-, 500/-, 800/-, 1000/-
शंख (दक्षिण मुखी) प्रिन्टेड गोरक्षनाथ जी के चित्र	250/-
कौड़ी के ऊपर प्रिन्टेड गुरु गोरक्षनाथ जी के चित्र	50/-

मूर्तियाँ (धातु में)

नाम	साईज	वजन	मूल्य	मूल्य ब्रास	पीतल (पीतल की पालिश)
	पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)				
2.	गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	6 "	1 Kg.	800/-	700/-
3	आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	10 "	1.300gm.	1100/-	800/-
4.	आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	6 "	600gm.	500/-	
5.	बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	9 "	2 Kg.	1100/-	800/-
6.	बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	6 "	1 Kg.	800/-	700/-

शीशे के फ्रेम, मन्दिर

विवरण	मूल्य
गुरु गोरक्षनाथ तथा बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (3×2 इंच, 5×3.5 इंच, 7×5 इंच)	25/-, 50/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के शीशा मन्दिर (बिजली) लाइट वाले	100/-, 200/-, 250/-, 500/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (गाड़ियों में बैटरी चालित, लाईट वाले)	150/-

(मूल्य सूची में समयानुसार परिवर्तन सम्भव है।)

नोट - मूल्य + पार्सल खर्च मनीऑर्डर या संस्था के नाम **D. D.** भेजने पर साहित्य पोस्ट द्वारा **V.P. L ., V.P.P.** से भेजा जायेगा।

अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का आर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।

सम्पर्क - योगी विलासनाथ जी (पुजारी) मो.: 09412072703

उपसंहार

योग सनातन सिद्ध का,
किया प्रारंभ ॐकार।
आदिनाथ संग शक्ति ने,
प्रगटा ज्ञान प्रकाश।।१।।

गुरू मछन्दरनाथ ने,
दिया ज्ञान प्रमाण।
जती गोरख योग का,
उचा गगण विहार।।२।।

नवनाथ चौरासी सिद्ध ने,
जन मानस मन जीत।
गुरू-शिष्य परमात्म की,
जोड़ दी है प्रीत।।३।।

सद्गुरू आनन्दनाथ जी,
कीजो कृपा अपार।
शिष्य नाथ विलास ने
किया ग्रंथ साकार।।४।।

पावन तीर्थ नगरी हरिद्वार आने वाले भक्तजनों

हरिद्वार में हर की पैड़ी के निकट श्री गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर में योगाचार्य गुरू गोरक्षनाथ जी के शिष्य भर्तृहरिनाथ जी की प्राचीन गुफा के दर्शन कर पुण्य के भागी बनें। इसी गुफा में २५०० वर्ष पूर्व भर्तृहरिनाथ जी ने तपस्या की तथा नीति, वैराग्य, शृंगार शतक ग्रन्थों की रचना की थी।

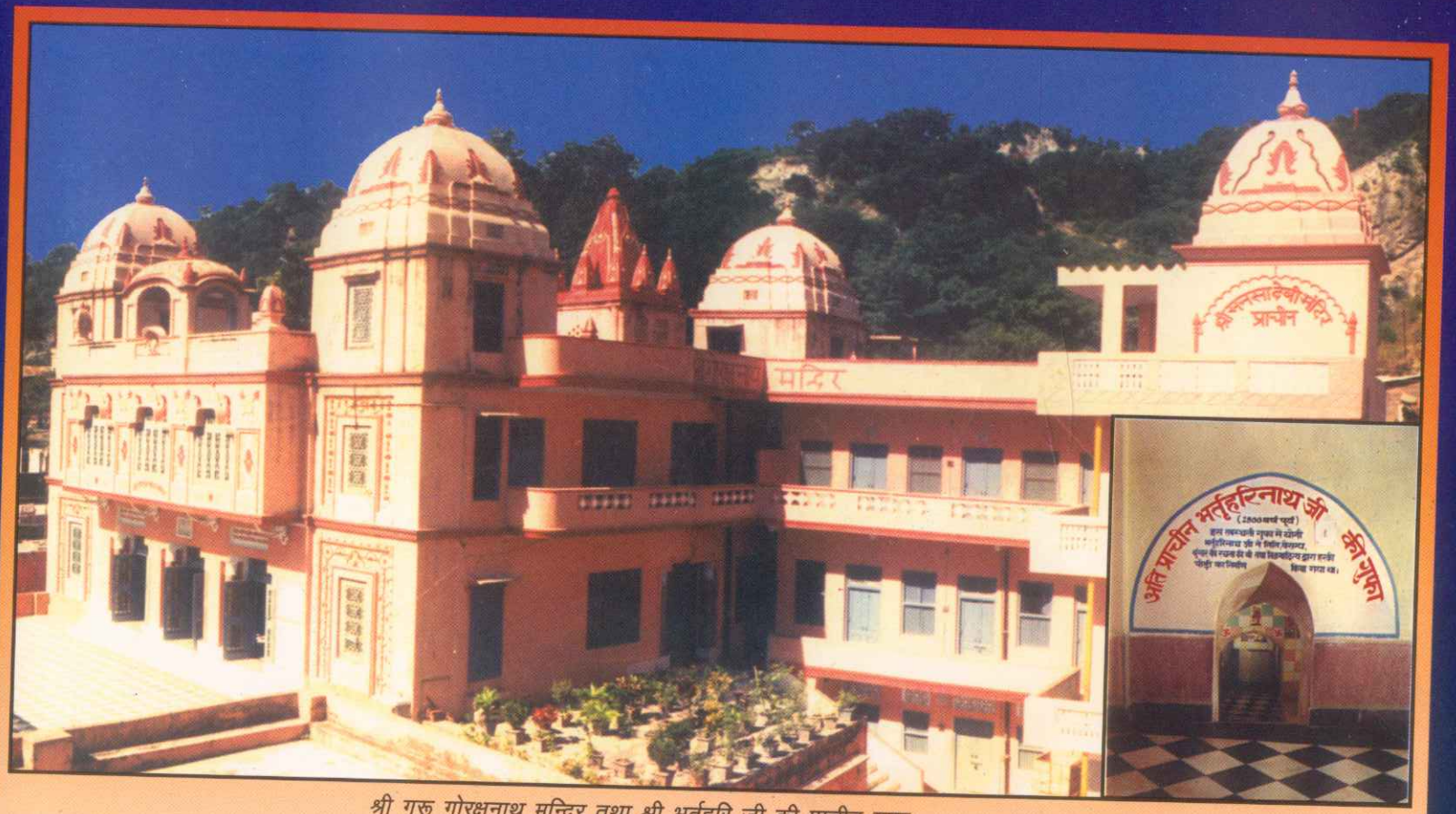

श्री गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर तथा श्री भर्तृहरि जी की प्राचीन गुफा

राजा भर्तृहरि नीति, वैराग्य, शृंगार तीनों के रचियता थे। श्री योगाचार्य गुरू गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। उज्जैन–मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण करके यहां तपस्या की थी। उस समय से यह गुफा व मन्दिर यहां विद्यमान है। राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से हर की पैड़ी का निर्माण किया था।

नोट : हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

प्राप्ति स्थान : अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरू गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा), अपर रोड, हरिद्वार, फोन : (01334) 226583

प्रकाशक : श्री बाबा मस्तनाथ मठ, मठ अस्थल बोहर, जिला रोहतक, हरियाणा